A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 2 मार्च, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 144, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

सायादार...

फोटो: बंसीलाल परमार

सुप्रभात

चले चलो कि सफ़र बाक़ी है,
अभी भी एक हुनर बाक़ी है,
सुबह सुबह जो उठ खड़े हैं हम,
किसी बुजुर्ग का डर बाक़ी है,
बस्तियाँ जल रहीं हैं नफ़रत में,
ज़हर से कौन सा घर बाक़ी है,
इधर तो तेज धूप निकली है,
शुक्र है कोई शज़र बाक़ी है,
याद के आईने में आज तलक,
वो एक वादे सहर बाक़ी है,
दिल समंदर सा गुनगुनाता है
कोई कमसिन सी लहर बाक़ी है।

– राजीव शर्मा

मोदी बोले | 'वोकल फॉर लोकल' से मिली वैश्विक पहचान

दुनिया की फैक्ट्री बनकर उभर रहा है अपना भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि उनका 'वोकल फॉर लोकल' अभियान अब रंग ला रहा है क्योंकि भारतीय उत्पाद वैश्विक हो रहे हैं और दुनियाभर में अपनी उपस्थिति दर्ज

'एनएक्सटी' सम्मेलन में कहा-भारत वर्कफोर्स नहीं 'वर्ल्ड फोर्स' है

करा रहे हैं। पीएम मोदी ने 'एनएक्सटी' सम्मेलन में 'न्यूजएक्स वर्ल्ड' चैनल के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि दुनिया दशकों तक भारत को अपने 'बैक ऑफिस' के रूप में देखती रही, लेकिन देश अब 'न्यू फैक्ट्री ऑफ वर्ल्ड' के रूप में उभर रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अब भारत वर्कफोर्स नहीं बल्कि एक 'वर्ल्ड फोर्स' है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा

कि भारत अब दुनिया की नई फैक्ट्री बन रहा है। पीएम मोदी ने शनिवार को कहा कि देश 'सेमीकंडक्टर' से लेकर एयरक्राफ्ट कैरियर तक सब बना रहा है। मखाना और बाजरा जैसे 'सुपरफूड', आयुष उत्पाद और योग को दुनिया भर में अपनाया जा रहा है।

देश की असली कहानियां दुनिया तक पहुंचनी चाहिए

पीएम मोदी ने कहा कि भारत को बिना किसी लीपा-पोती के वैसा ही पेश किया जाना चाहिए जैसा वह है। इसे किसी तरह के दिखावे की जरूरत नहीं है। देश की असली कहानियां दुनिया तक पहुंचनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार का तीसरी बार फिर से चुना जाना लोगों के भरोसे को दर्शाता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत का नया वैश्विक समाचार चैनल देश की उपलब्धियों को विदेशों तक ले जाएगा।

दुनिया 21वीं सदी में भारत की ओर देख रही

पीएम मोदी कहा कि दुनिया 21वीं सदी में भारत की ओर देख रही है और देश लगातार सकारात्मक खबरें पैदा कर रहा है। भारत अब कई वैश्विक पहलों का नेतृत्व कर रहा है। उन्होंने हाल में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) शिखर सम्मेलन की सह–मेजबानी और जी–20 में भारत की अध्यक्षता का जिक्र किया। पीएम मोदी ने महाकुंभ का जिक्र करते हुए कहा कि इसने कार्यक्रमों का आयोजन करने के भारत के कौशल और इनोवेशन को उजागर किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने कई अप्रचलित कानूनों को निरस्त कर दिया है। अंग्रेजों के एक कानून के तहत 10 या उससे अधिक लोगों के डांस करने को अपराध माना गया था और यह कानून तब तक लागू रहा जब तक कि उनकी सरकार ने इसे निरस्त नहीं कर दिया। प्रधानमंत्री ने 'लुटियन जमात' और 'जनहित याचिका के ठेकेदार' पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वे हर चीज के लिए अदालत जाते हैं, लेकिन ऐसे कानून पर चुप्पी साधे रहते हैं।

किसान सम्मेन में मुख्यमंत्री यादव बोले

कोई नक्सली यहां से जिंदा नहीं जाएगा

बालाघाट (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में नक्सलवाद के लिए कोई जगह नहीं है। कोई भी आकर आपको तंग नहीं करेगा। कोई किसी राज्य से आ जाए, तो जिंदा नहीं जाएगा।

मुख्यमंत्री शनिवार को बालाघाट में किसान सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे। यहां उन्होंने 326 करोड़ 60 लाख के 117 अलगङ्खअलग कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण किया। सीएम ने किसानों को चावल के लिए प्रति हेक्टेयर 4 हजार रुपए प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री ने बालाघाट में हॉकी से बॉल को हिट कर एस्ट्रो टर्फ का लोकार्पण कर, खिलाड़ियों से संवाद कर आशीर्वाद दिया।

डॉ यादव का आदिवासी परंपरा से यहां स्वागत किया गया। पहले उन्होंने हॉकी मैदान में एस्ट्रो टर्फ का लोकार्पण किया। इसके बाद रेंजर महाविद्यालय में आयोजित किसान सम्मेलन में शामिल हुए। यहां दिव्यांगों को उपकरण बांटे।

मध्यप्रदेश को नंबर वन राज्य बनाने का संकल्प, गेहूं उपार्जन के लिए 2600 रुपए प्रति क्विंटल दिए जाएंगे– सीएम ने कहा कि अब से गेहूं उपार्जन के लिए 2600 रुपए प्रति क्विंटल दिए जाएंगे। लाड़ली बहनों के लिए उन्होंने कहा कि अगले चार साल में योजना के मुताबिक धीरे-धीरे पूरा पैसा देने की कोशिश करेंगे। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों को मुट्?ठी बांधकर मध्यप्रदेश को देश में नंबर वन राज्य बनाने का संकल्प दिलाया।

सम्मेलन में 9 विभागों की योजनाओं की प्रदर्शनी– किसान सम्मेलन में 9 विभागों की योजनाओं की प्रदर्शनी लगाई गई। इनमें कृषि, उद्यानिकी, सीसीबी, एनआरएलएम, वन, पशुपालन-डेयरी, मत्स्य और स्वास्थ्य विभाग शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने इस दौरान प्रदर्शनियों का अवलोकन भी किया।

नक्सलवादियों के पांव जमने वाले नहीं

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में नक्सलवादियों के पांव जमने वाले नहीं हैं। पहले आईजी लेवल के अफसर मॉनिटरिंग में लगते थे, लेकिन अब डीजी लेवल के अफसर मॉनिटरिंग करेंगे। नक्सलियों के खात्मे के लिए जो भी जरूरत पड़ेगी, हर हाल में करेंगे। सीएम डॉ यादव ने कहा-किसी भी कीमत पर नक्सलियों को यहां नहीं रहने देंगे। हमारे लोग मेहनत करते हैं। सड़क बनाते हैं, स्कूल खोलते हैं। ये लोग दादागिरी के बलबूते पर माहौल बनाते हैं, तो इनकी जगह यहां नहीं रहने वाली है।'

लांजी में विकसित होगा कोटेश्वर धाम, किरनापुर बनेगी नगर पंचायत

सीएम डॉ. मोहन यादव बालाघाट के बाद जिले के लांजी भी पहुंचे। यहां उन्होंने कोटेश्वर शिवलिंग का पूजन किया। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा और रानी अवंतीबाई की प्रतिमा का अनावरण किया। रानी अवंतीबाई स्टेडियम में आयोजित जनसभा में सीएम ने कहा कि गोंड राजाओं के शासनकाल में बनाए गए कोटेश्वर शिवधाम का जीर्णोद्धार किया जाएगा। किरनापुर को नगर पंचायत बनाने और कारंजा में सर्वे के बाद कॉलेज खोलने की घोषणा की। साथ ही, कारंजा स्कूल का नाम आरएसएस के संघचालक स्व. बाला साहब देवरस और भाउदास देवरस के नाम से करने की घोषणा की।

सुरक्षा समीक्षा बैठक | अमित शाह का सख्त आदेश

8 मार्च तक मणिपुर की बंद सभी सड़कें खोलें

नई दिल्ली/इंफाल (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को मणिपुर मामले पर चर्चा करने के लिए अहम बैठक बुलाई। यह समीक्षा बैठक गृह मंत्रालय में हुई। मणिपुर की सुरक्षा को लेकर ये समीक्षा बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता गृह मंत्री अमित शाह ने की। अमित शाह ने इस बैठक में आदेश दिया किया राज्य की सभी सड़कों पर 8 मार्च से आवाजाही चालू हो। सभी बंद रास्ते खोले जाएं। वहीं शाह ने आदेश दिया कि नशे में लिफ्ट नेटवर्कको ध्वस्थ किया जाए। शाह ने बैठक में सख्त आदेश देते हुए कहा कि अवरोध उत्पन्न करने वालो पर कड़ी कार्रवाई की जाए। जबरन वसूली करने वालों को भी बख्शा नहीं जाए। उन्होंने अंतराराष्ट्रीय सीमा पर बाड़ लगाने का भी आदेश दिया। गृह मंत्री ने मणिपुर में सुरक्षा स्थिति का जायजा लिया। राज्य में कानून-व्यवस्था की समग्र स्थिति पर विस्तृत जानकारी दी गई। सूत्रों ने बताया कि बैठक में मई 2023 से पहले जैसी स्थिति बहाल करने और विभिन्न समूहों के पास मौजूद अवैध एवं लूटे गए हथियार पुलिस को सौंपे जाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। बैठक में राज्यपाल अजय कुमार भल्ला तथा मणिपुर सरकार, सेना और अर्धसैनिक बलों के शीर्ष अधिकारी शामिल हुए। मई 2023 से इंफाल घाटी में मेइती और आसपास की पहाड़ियों पर बसे कुकी-जो समूहों के बीच जातीय हिंसा में 250 से अधिक लोग मारे गए हैं और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह के अपने पद से इस्तीफा देने के कुछ दिनों बाद पूर्वोत्तर राज्य में राजनीतिक अनिश्चितता पैदा हो गई थी। इसके बाद केंद्र ने 13 फरवरी को मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगा दिया था। राज्यपाल अजय कुमार भल्ला ने लोगों से लूटे गए और अवैध रूप से रखे गए हथियारों को सात दिन के भीतर स्वेच्छा से पुलिस के सुपुर्द करने का 20 फरवरी को आग्रह किया था।

उज्जैन में विक्रमोत्सव

विक्रमादित्य का न्याय वैचारिक समागम का शुभारंभ मुख्यमंत्री व चीफ जस्टिस ऑफ म.प्र.सुरेश कुमार कैत ने किया

विक्रमोत्सव से आरंभ हो रहा है न्याय की उत्कृष्ट परंपरा पर मंथन- सीएम

उज्जैन से डॉ. जफर महमूद

विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत 1 से 3 मार्च 2025 तक पं. सूर्यनारायण व्यास संकुल, कालिदास अकादमी में विक्रमादित्य का न्याय वैचारिक समागम का आयोजन का शुभारंभ हुआ। इस समागम का शुभारंभ करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि विक्रमादित्य की नगरी से न्याय व्यवस्था पर मंथन हो रहा है। वैदिक काल से हमारी जीवन शैली सहज तरीके से जीवन जीने की रही है। हम सब देखते रहे हैं कि हमारे अगल-बगल के राष्ट्रों में न्याय व्यवस्था नष्ट भ्रष्ट होती रही है। कहीं राष्ट्रपति को फांसी ,तो कहीं मूर्तियों को खंडित किया जाता हम देख रहे हैं। हमारे जीवन शैली सहज सरल तरीके से जीने की रही है। भारत में हर काल में शांति और संतों की परंपरा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि

शासन व्यवस्था में उम्र नहीं योग्यता ही देखी जाती है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अजीत डोभाल जी की उम्र नहीं योग्यता देखकर ही उन्हें पदस्थ किया है।

मुख्य न्यायाधीश सुरेश कुमार कैत ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय समाज में धर्म, नैतिकता, निष्पक्षता राजधर्म था। न्याय व्यवस्था में अपराधी को दंडित करने के साथ सुधारने का काम भी होना चाहिए। प्राचीन काल में भारत में ग्राम सभाओं में यही कार्य किया जाता था। भारतीय संविधान में न्याय की पहुंच की अवधारणा वही है जो विक्रमादित्य से चली आ रही है।त्वरित और निष्पक्ष न्याय मिलना चाहिए। वर्तमान में देरी से समय पर न्याय नहीं मिल पाने का कारण न्यायाधीशों की कमी है ।न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने की जरूरत है ।मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में रहकर हमने जाना है कि 4 लाख 64 हजार मुकदमे पेंडिंग हैं ।53 में से केवल 34 न्यायाधीश ही व्यवस्था में कार्य कर रहे हैं। हमने आवश्यकता अनुसार 85 न्यायाधीशों सिफारिश की है ।बढ़ती चुनौती के साथ न्याय प्रणाली को समावेशी पारदर्शी बनाना होगा। न्याय केवल दंड देने का साधन नहीं है ।भारतीय न्याय प्रणाली को मजबूत और अधिक प्रभावी बनाना होगा।

शुभारंभ कार्यक्रम में उच्च न्यायालय ग्वालियर के न्यायमूर्ति अनिल वर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि उज्जयिनी न्याय ,धर्म और पराक्रम के लिए प्रसिद्ध है। स्वागत उद्बोधन जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेश कुमार गुप्ता ने प्रस्तुत किया। संचालन विधिक सहायता अधिकारी चंद्रेश मंडलोई ने किया। आभार विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक एवं मुख्यमंत्री के सांस्कृतिक सलाहकार श्री राम तिवारी ने व्यक्त किया।

शिव केंद्रित नृत्य नाटिका और भजनों ने समां बांधा

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 भारतीय समाज को अपने ही इतिहास से परिचित करवाने का प्रयास है। विक्रमोत्सव एक आयोजन मात्र नहीं है बल्कि यह उस भारतीय परंपरा का धोतक है जहां हम अपने पूर्वजों का पूर्ण स्मरण करते हैं। और उनके बताएं रास्ते पर चलकर भारतवर्ष को नित्य नयी ऊंचाई तक पहुंचाने का विनम्र प्रयास करते हैं। विगत वर्षों में विक्रमोत्सव ने देश के सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी उत्सव धर्मी पहचान को बखूबी स्थापित किया है। विक्रमोत्सव के अंतर्गत आयोजित आदि–अनादि पर्व के उज्जयिनी विक्रम व्या?पार मेला मंच पर इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में साधना मालवीय द्वारा शिव केन्द्रित नृत्य नाटिका की आकर्षक प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में शिव के अनेक रूपों को साकार कर दिखाया। वहीं मंच से सुश्री हर्षा शर्मा ने सुमधुर भजन गायन से समां बांधा।इधर महाकाल कॉरिडोर के ओपन मंच पर गगन सिंह बेस (दिल्ली) द्वारा ताल वाद्य कचहरी की कर्णप्रिय प्रस्तुति ने दर्शकों को भाव विभोर किया।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे
इंदौर ■ रविवार, 2 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

पीथमपुर में अबतक यूका का 3240 किलो कचरा जला

हर घंटे 135 किलो वेस्ट जलाया जा रहा, काली पट्टी बांधकर महिलाएं नारेबाजी कर रहीं

पीथमपुर (नप्र)। पीथमपुर में भोपाल की यूनियन कार्बाइड का 10 टन केमिकल वेस्ट जलाने की प्रक्रिया दूसरे दिन भी जारी है। शनिवार दोपहर 3 बजे तक 3240 किलोग्राम कचरा जलाया जा चुका है।

मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी श्रीनिवास द्विवेदी ने बताया कि इस प्रक्रिया में कचरे के साथ समान मात्रा में यानी 3240 किलोग्राम चूना भी मिलाया गया। फ्लू गैस को साफ करने के लिए 3.6 टन चूना, 1.8 टन एक्टिवेटेड कार्बन और 24 किलोग्राम सल्फर इस्तेमाल किया गया। इसमें करीब 21,000 लीटर डीजल खर्च हो चुका है।

हर घंटे 135 किलो वेस्ट जलाया जा रहा है। शुक्रवार दोपहर 3 बजे से प्रक्रिया शुरू की गई थी। रातभर प्लांट चलता रहा। यह प्रक्रिया 3 मार्च तक चलेगी।

प्लांट के पास 500 से ज्यादा पुलिस बल तैनात है। रोजाना की तरह बाजार खुले हैं। तारपुरा गांव में भी हालात सामान्य हैं। हालांकि लोगों में दहशत है, लेकिन खुलकर बोलने के लिए कोई तैयार नहीं है। पीथमपुर बचाओ समिति के अध्यक्ष हेमंत हीरोले ने बताया कि कानूनी सलाह लेकर आगामी दिनों में जबलपुर हाईकोर्ट में फिर से पक्ष रखेंगे। कानूनी लड़ाई जारी रहेगी।

इधर, महाराणा प्रताप बस स्टैंड पर कुछ महिलाएं विरोध जताने पहुंच गईं। सिर पर काली पट्टी बांध कर महिलाएं नारेबाजी कर रही हैं। पुलिस अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में महिला पुलिस मौजूद है।

हर 8 घंटे में शिफ्ट बदली जा रही है- मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के रीजनल अफसर श्रीनिवास द्विवेदी के मुताबिक इस काम में 20 से 30 लोगों का स्टाफ लगा है। हर 8 घंटे में शिफ्ट बदली जा रही है। भोपाल और दिल्ली से भी प्रदूषण विभाग निगरानी कर रहा है। तय मापदंड के अनुसार ही कचरे को इंसीनरेटर में डाला जा रहा है। कंट्रोल रूम से मॉनिटरिंग की जा रही है। हर घंटे का डेटा तैयार किया जा रहा है।

850 डिग्री सेंटीग्रेड पर जला रहे कचरा- इंसीनरेटर को 27 फरवरी की रात 10 बजे से शुरू किया गया, जो लगभग 12 से 14 घंटे बिना कचरा डाले चलाया गया, ताकि प्राथमिक दहन कक्ष का तापमान 850 डिग्री सेंटीग्रेड और द्वितीयक दहन कक्ष का तापमान 1100 डिग्री सेंटीग्रेड से ज्यादा हो जाए। इसमें प्रति घंटे 500 से 600 लीटर प्रतिघंटे डीजल की खपत हो रही है।

एक घंटे में 30 बैग प्राथमिक कक्ष में डाल रहे

इंसीनरेटर में डालने के लिए 4.5 किलोग्राम वेस्ट में 4.5 किलोग्राम चूना मिलाकर यानी 9 किलोग्राम के बैग बनाए गए हैं। एक घंटे में 30 बैग इंसीनरेटर के प्राथमिक दहन कक्ष में डाले जा रहे हैं। इंसीनरेटर के संचालन से बनने वाली फ्लू गैस के रिफाइनमेंट के लिए स्प्रे ड्रायर, मल्टी सायकलॉन, ड्राय स्क्रबर, बैग फिल्टर, वेट स्क्रबर सभी प्रभावी ढंग से काम कर रहे हैं।

चिमनी से हो रहे उत्सर्जन की लगातार जांच के लिए ऑनलाइन मॉनिटरिंग सिस्टम चल रहा है। इससे कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई ऑक्साइड, ऑक्सीजन, हाइड्रोजन फ्लोराइड, हाइड्रोजन क्लोराइड, पर्टिकुलेट मैटर, सल्फर डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन के ऑक्साइड, टोटल ऑर्गेनिक कार्बन की जांच की जा रही है। रिजल्ट एमपी और केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सर्वर पर मिल रहे हैं।

पर्यावरण विभाग के प्रमुख सचिव डॉ. नवनीत कोठारी, इंदौर कमिश्नर दीपक सिंह, धार कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, मप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सदस्य सचिव एए मिश्रा ने दहन प्रक्रिया का जायजा लिया।

सभी रास्ते बंद, स्पेशल आर्म्ड फोर्स तैनात

कंपनी के आसपास कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। कंपनी परिसर के पास के सभी रास्ते बंद कर दिए गए हैं, नाकाबंदी की गई है। बिना पूछताछ किसी को भी कंपनी परिसर के पास जाने की इजाजत नहीं है।नजदीकी गांव तारपुरा में भी पुलिस बल तैनात है। नागरिकों को बिना कारण घर से बाहर नहीं निकलने की हिदायत दी गई है।प्लांट परिसर में स्पेशल आर्म्ड फोर्स के 130 जवान तैनात हैं। परिसर के बाहर डीएसपी रैंक के अधिकारी भी हैं। पीथमपुर शहर में इंदौर देहात और धार जिले के 24 थानों के पुलिसकर्मी सुरक्षा-व्यवस्था संभाल रहे हैं। करीब 650 जवान शहर के अलग-अलग चौराहों, कॉलोनियों और तारपुरा गांव में मौजूद हैं।

लगातार चौबीस घंटे लोक नृत्य कर विश्व रिकार्ड बनाने मंच पर उतरे दस कलाकार

बुरहानपुर (नप्र)। बिना रुके लगातार चौबीस घंटे लोक नृत्य कर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड लंदन में नाम दर्ज कराने के लिए शनिवार से बुरहानपुर के परमानंद गोविंदजीवाला आडिटोरियम में लोक कलाकार मुकेश दरबार सहित दस कलाकारों का दल मंच पर उतर गया है।

इस कार्यक्रम से वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड लंदन की टीम वर्चुअली जुड़ी हुई है। लोक नृत्य का यह अनूठा कार्यक्रम शनिवार दोपहर 2.49 बजे प्रारंभ हुआ है, जो रविवार दोपहर 2.49 बजे समाप्त होगा।

निमाड़ की लोक संस्कृति को विश्व पटल पर पहचान दिलाने के लिए मप्र संस्कृति विभाग, जिला पुरातत्व पर्यटन एवं संस्कृति विभाग और जन जागृति कला केंद्र

नेपानगर ने संयुक्त रूप से इसका आयोजन किया है।

कलाकारों का यह दल चौबीस घंटे के दौरान निमाड़ के प्रसिद्ध भगोरिया, गणगौर और फगुआ नृत्य की प्रस्तुति देगा। इस दौरान देसी वाद्य यंत्रों ढोल, मांदल, बांसुरी, हारमोनियम, थाली आदि के माध्यम से संगीत दिया जाएगा। कलाकार तीनों लोक नृत्यों की वेशभूषा भी नृत्य करते हुए ही बदलेंगे।

कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर मौजूद सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल ने कहा कि जन जागृति कला केंद्र के प्रमुख मुकेश दरबार और उनकी टीम सहित जिला प्रशासन बधाई के पात्र हैं। दरबार ने अपनी कला के माध्यम से निमाड़ की लोक संस्कृति को देश और विदेश तक पहले भी पहुंचाया है। अब विश्व रिकार्ड बनाने का प्रयास किया जा रहा है, जो प्रशंसनीय है। इससे विदेशों तक मप्र और निमाड़ की लोक संस्कृति को पहचान मिलेगी।

अब ममता बनर्जी भी बोलीं | चुनाव अधिकारी ने दी सफाई

वोटर लिस्ट में फर्जी नाम जुड़वा रही है बीजेपी

- ईसी ने ममता के आरोपों को खारिज किया, आयोग की प्रक्रिया स्पष्ट की

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग पर कीचड़ फेंकने की रेस में अब ममता बनर्जी भी शामिल हो गई हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने चुनाव में धांधली के आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि बीजेपी फर्जी वोटरों के नाम जोड़कर चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश कर रही है लेकिन राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है। आयोग ने कहा कि वोटर लिस्ट को अपडेट करने की प्रक्रिया नियमों के मुताबिक ही होती है। आयोग ने सोशल मीडिया पर एक बयान जारी किया। इसमें उन्होंने वोटर लिस्ट अपडेट करने के नियमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया, जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950, मतदाता पंजीकरण नियम 1960 और मतदाता सूची पर मैनुअल के अनुसार, किसी भी राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में संबंधित मतदाता सूची के अपडेशन के लिए काम करते हैं। यानी वोटर लिस्ट को अपडेट करने का काम कई अधिकारी मिलकर करते हैं। उन्होंने आगे बताया,यह राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बूथ स्तर के एजेंटों की सक्रिय भागीदारी के साथ किया जाता है।

सरकारी स्कूल में एडमीशन ले सकेंगे रोहिंग्या बच्चे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि रोहिंग्या बच्चे सरकारी स्कूलों में एडमीशन ले सकते हैं। एडमीशन देने से मना किए जाने पर वे हाईकोर्ट जा सकते हैं। कोर्ट ने यह आदेश यूएनएचआरसी कार्ड रखने वाले शरणार्थी रोहिंग्या बच्चों के लिए दिया है। मामले की सुनवाई जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की बेंच ने रोहिंग्या ह्यूमन राइट्स इनिशिएटिव नाम के एनजीओ की याचिका पर आदेश दिया है।

- सुप्रीम कोर्ट का आदेश

इनकार किए जाने पर हाईकोर्ट जाने का है हक

याचिका में कहा गया था कि रोहिंग्या शरणार्थियों के पास आधार कार्ड न होने की वजह से उन्हें ये सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं। वे शरणार्थी हैं, उनके पास आधार कार्ड नहीं हो सकते। उनके पास यूएनएचआरसी कार्ड हैं। सुप्रीम कोर्ट 12 फरवरी को भी इसी तरह की एक याचिका पर ऐसी ही आदेश दे चुका है। तब कोर्ट ने कहा था कि शिक्षा हासिल करने में किसी भी बच्चे के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा।

महाकुंभ में उमड़ा जनसैलाब विपक्ष के मुंह पर करारा तमाचा

केशव बोले-अखिलेश हमारे सलाहकार नहीं सपा-कांग्रेस दलितों की दुश्मन पार्टी

झांसी (एजेंसी)। यूपी के डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने कहा, जिन्होंने महाकुंभ पर सवाल उठाए, उमड़े जनसैलाब ने उनके मुंह पर तमाचा मारा है। केशव झांसी के सर्किट हाउस में मीडिया से बात कर रहे थे। महाकुंभ भगदड़ में मृतकों के परिवारों को मुआवजा देने के अखिलेश यादव के सुझाव पर डिप्टी सीएम ने कहा, अखिलेश हमारे सलाहकार नहीं हैं। सरकार जानती है कि क्या और कैसे करना है। भाजपा ही एक ऐसी पार्टी है, जो सबको साथ लेकर चलती है। उन्होंने महाकुंभ

में सरकार की व्यवस्था को बेहतर बताया। मौर्य ने मां पीतांबरा पीठ के दर्शन किए।

108 हवन कुंड, 2100 पंडित, 1500 कन्याओं के साथ कलश यात्रा

दरभंगा (एजेंसी)। बिहार के दरभंगा जिले के लगमा गांव में दुनिया का सबसे बड़ा यज्ञ हो रहा है। 1 से 16 मार्च तक लक्षचंडी महायज्ञ और अति विष्णु यज्ञ का आयोजन हो रहा है। इस यज्ञ में 2100 पंडित शामिल होंगे और बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र शास्त्री भी 11 से 13 मार्च तक उपस्थित रहेंगे। यह यज्ञ विश्व कल्याण के लिए किया जा रहा है। आज 1500 कन्याओं ने कलश यात्रा निकाली। इसी के साथ यज्ञ शुरू हो गया। यहां पर 108 हवन कुंड बनाए गए हैं। दरभंगा के लगमा गांव में यज्ञ हो रहा है।

केमिकल अटैक पर अलर्ट की तकनीक ग्वालियर में बनी

ग्वालियर (नप्र)। देश के रक्षा संस्थान डीआरडीओ (डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन) की ग्वालियर स्थित डीआरडीई लैब ने रक्षा क्षेत्र में एक बड़ा कदम बढ़ाया है। दुनिया में न्यूक्लियर, जैविक और रासायनिक युद्ध का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। इस तरह के युद्ध का खतरा होने पर अलर्ट करने और अधिक से अधिक बचाव के लिए ग्वालियर के साइंटिस्ट डॉ. सुशील बाथम की टीम ने 'एसीएडीए' (ऑटोमैटिक केमिकल एजेंट डिटेक्टर और अलार्म) विकसित किया है। यह डिवाइस 'एसीएडीए' हवा में घुले केमिकल के बारीक कणों को भी कैच कर ऑडियो और वीडियो रूप में अलर्ट जारी करेगा। भारत इस डिवाइस को स्वदेशी तकनीक से विकसित करने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया है। हाल ही में भारतीय सेना और वायु सेना ने 'एसीएडीए' की 223 यूनिट का ऑर्डर दिया है।

विरोधी दल की तारीफ की तो अब खैर नहीं

कांग्रेस आलाकमान का चलेगा डंडा, थरूर की तरफ इशारा!

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। कांग्रेस की अगुआई वाला गठबंधन यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट यानी यूडीएफ 2016 से राज्य की सत्ता से बाहर है। केरल में मोटे तौर पर एक बार लेफ्ट के गठबंधन एलडीएफ की सरकार बनती है तो अगली बार यूडीएफ की लेकिन लेफ्ट ने पिछले दो चुनावों से लगातार जीत हासिल की है और अब उसकी नजर हैटट्रिक पर है। दूसरी तरफ, कांग्रेस 10 साल बाद

केरल की सत्ता में वापसी के लिए पूरा जोर लगा रही है। उसके सामने लेफ्ट के साथ-साथ बीजेपी की भी चुनौती है जो उसके जनाधार में सेंध लगाने की कोशिश में है। लेकिन असली चुनौती एकजुटता है। पार्टी को लगता है कि अगर एकजुट होकर पूरी मजबूती से चुनाव लड़ा गया तो लेफ्ट को सूबे की सत्ता से हटाने में वह कामयाब हो जाएगी। पार्टी हाईकमान ने इसीलिए केरल के नेताओं को सख्त हिदायत दे दी है कि अगर किसी विरोधी दल की तारीफ किए तो खैर नहीं। आखिर कांग्रेस को ये क्यों कहना पड़ा। कहीं ये इशारों-इशारों में शशि थरूर को तो हिदायत नहीं है। सबसे पहले, कांग्रेस आलाकमान ने केरल के नेताओं को ताकीद दी है कि कोई भी अपनी निजी राय सार्वजनिक रूप से नहीं देगा। नहीं कार्रवाई की जाएगी।

सर्कुलर जारी | सरकारी-प्राइवेट दोनों विभागों में होगा लागू

कर्नाटक में सभी उत्पादों पर अब कन्नड़ लिखना जरूरी

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक सरकार ने सरकारी ऑफिस, एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को अनिवार्य करने का आदेश जारी किया है। इस कदम का मकसद प्रशासन, शिक्षा और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को बढ़ावा देना है। सरकार ने इस संबंध में 15 फरवरी 2025 को सर्कुलर जारी किया था। सरकार के मुताबिक यह फैसला कन्नड़ लैंग्वेज कॉम्प्रीहेंसिव डेवलपमेंट एक्ट के तहत लिया गया है। ये 2022 में लागू किया गया था, जो 12 मार्च 2025 से प्रभावी होगा। इसका उद्देश्य कन्नड़ भाषा का व्यापक विकास और स्थानीय लोगों को बेहतर अवसर देना है। कर्नाटक सरकार के नियमः सभी सरकारी ऑफिस, स्कूलों, कॉलेजों और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को प्राथमिकता दी जाएगी। सार्वजनिक साइनबोर्ड, एडवर्टाइजमेंट और वर्क प्लेस पर कन्नड़ भाषा बोली-लिखी जाएगी। सामानों की पैकेजिंग पर नाम और जानकारी कन्नड़ में छापना अनिवार्य होगा।

एनकाउंटर में 2 नक्सली ढेर बड़े नक्सल लीडर्स से मुठभेड़

सुकमा में 500 जवानों ने चारों तरफ से घेरा, रुक-रुककर चल रही फायरिंग

सुकमा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में जवानों ने 2 नक्सलियों को मार गिराया है। इनमें एक महिला और एक पुरुष नक्सली है। दोनों के शव बरामद कर लिए गए हैं, लेकिन पहचान नहीं हो पाई है। मारे गए नक्सलियों को मिलाकर 2025 में 83 नक्सली ढेर हुए हैं। मामला किस्टाराम थाना क्षेत्र का है। मिली जानकारी के मुताबिक शनिवार सुबह से पुलिस और नक्सलियों के बड़े लीडर्स से मुठभेड़ चल रही है। दोनों तरफ से रुक-रुककर फायरिंग हो रही है।

बहस के बाद व्हाइट हाउस से निकाले गए जेलेंस्की

ट्रंप ने कहा-जेलेंस्की अब बहस की हालत में नहीं हैं

अमरीकी राष्ट्रपति ट्रम्प के साथ जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस रद्द

यूक्रेनी ने माफी मांगने से किया इनकार

वॉशिंगटन (एजेंसी)। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के साथ बहस के बाद व्हाइट हाउस से बाहर निकाल दिया गया। दोनों नेताओं के बीच शुक्रवार को एनएसए माइक वाल्ट्ज से बातचीत की। चर्चा के दौरान ट्रम्प ने कहा कि जेलेंस्की बातचीत की हालत में नहीं हैं। इसके बाद उन्होंने माइक वाल्ट्ज और रुबियो से कहा कि वे जाकर खुद जेलेंस्की

करीब 10 मिनट तक तीखी बहस हुई थी। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने बताया कि बहस के बाद यूक्रेन के डेलिगेट्स ओवल ऑफिस से निकलकर दूसरे कमरे में चले गए थे। अमेरिकी टीम वहीं रुकी रही। इस दौरान ट्रम्प ने उपराष्ट्रपति वेंस, विदेश मंत्री रुबियो और को कह दें कि उनके जाने का वक्त हो गया है। ये दोनों अधिकारी वहां पहुंचे तो जेलेंस्की ने उनसे कहा कि वे चीजों को ठीक कर सकते हैं। जेलेंस्की ने फिर से ट्रम्प के साथ बातचीत करने की इच्छा जाहिर की, लेकिन उन्हें यह मौका नहीं दिया गया। दोनों नेताओं की जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस भी रद्द हो गई।

दुखद खबर | उत्तराखंड हिमस्खलन में सेना का रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

चमोली एवलांच में चली गई 4 मजदूरों की जान

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के चमोली में हिमस्खलन में फंसे 4 मजदूरों की मौत हो गई है। कुल 57 में से 48 को निकाल लिया गया था। बाकी के 9 को बचाने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा था, जिसमें से 4 ने दम तोड़ दिया। कल सुबह यहां हुए हादसे के बाद से सेना, एयरफोर्स, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ लगातार रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया हुआ है। बद्रीनाथ के आगे माणा गांव के पास कल सुबह हिमस्खलन की यह घटना हुई। आपदा में कुल 57 लोगों के फंसने की बात सामने आई थी। कई लोगों को

कल ही बचा लिया गया था और कई को आज निकाला गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार बाहर निकाले गए लोगों में से 4 ने दम तोड़ दिया। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने भी आपदा प्रभावित इलाके का जायजा लिया। हेलीकॉप्टर से सर्वे के साथ ही उन्होंने पीड़ितों से मुलाकात भी की। पीएम मोदी ने धामी से बात करके राहत और बचाव अभियान की जानकारी भी ली। सुरक्षित बाहर निकाले गए श्रमिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। इस हादसे के बाद खराब मौसम की वजह से रेस्क्यू में दिक्कत हो रही है।

परिक्रमा

कांग्रेसजनों को अनुशासित कर पायेंगे हरीश चौधरी?

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

2023 के विधानसभा चुनाव और 2024 के लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में कांग्रेस के तेजी से खिसकते जनाधार को लेकर उसका चिंतित होना स्वाभाविक है, क्योंकि यहां पर उसका मजबूत जनाधार रहा है और भाजपा व कांग्रेस के बीच मतों का अन्तर भी कुछ अपवादों को छोड़कर काफी कम रहता आया है। इस समय लोकसभा में कांग्रेस का मध्यप्रदेश से कोई सांसद नहीं है। दो चुनावी पराजयों ने उसे आत्मावलोकन के लिए संभवतः मजबूर कर दिया है और यही कारण है कि प्रदेश में प्रभारी में भी अचानक बदलाव कर दिया गया है और राजस्थान के कांग्रेस नेता हरीश चौधरी को अब यह जिम्मेदारी दी गयी है कि वह मध्यप्रदेश में सूखती कांग्रेस की जमीन को हरा-भरा व उर्वरा करें, हालांकि यह आसान काम नहीं है क्योंकि केन्द्र व राज्य दोनों में ही भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं और मध्यप्रदेश तथा देश में उसका मजबूत संगठन है। चूंकि यहां डेढ़ साल के अंतराल को छोड़कर 2003 से भाजपा की ही सरकार रही है इसलिए देखने वाली बात यही होगी कि क्या हरीश चौधरी यहां कुछ गुल खिला पायेंगे और कांग्रेसजनों को अनुशासित करने में वे कितने सफल होंगे।

बतौर प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में बैठक में कहा है कि अनुशासन उनकी पहली प्राथमिकता होगी क्योंकि संगठन को मजबूत बनाना है, इसके लिए सभी को एकजुट होकर काम करना होगा। प्रदेश प्रभारी बनाये जाने के बाद अपने पहले राजधानी प्रवास में उन्होंने प्रदेश पदाधिकारियों और राजनीतिक मामलों की समिति के सदस्यों से अलग-अलग चर्चा की, यह चर्चा लगभग चार घंटे तक चली। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे प्रदेश के लिए एक छात्र की तरह हैं, उन्हें यहां के बारे में कुछ भी पता नहीं, पार्टी प्रदेश के लिए जो भी तय करेगी उसका अनुसरण करेंगे। प्रदेश में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच सहयोगी की भूमिका में रहूंगा और मिशन मध्यप्रदेश के लिए काम करुंगा। उन्होंने अपने इस इरादे को भी साफ कर दिया कि वे पार्टी की मजबूती के लिए लगातार प्रदेश में प्रवास करेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मैं नेहरुवादी हूं, मेरे शब्द व मेरी समझ में कोई अन्तर नहीं है। भाजपा पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि उनकी कोशिश रहती है कि कांग्रेस को खंड-खंड करें, लेकिन ऐसा नहीं हो पायेगा। उल्लेखनीय है कि इस बैठक में पूर्व मुख्यमंत्री द्वय कमलनाथ और दिग्विजय सिंह तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रहे अरुण यादव नहीं आये, लेकिन नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे, कांतिलाल भूरिया, सज्जन सिंह वर्मा व पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने बैठक में हिस्सा लिया। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने की।

काम के पदाधिकरी बना पायेंगे हरीश ?

हरीश चौधरी ने अपने प्रवास में इस बात पर जोर दिया कि पदाधिकारी नाम के नहीं बल्कि काम के होने चाहिए। चुनाव और सत्ता में आने पर आगे-आगे जो लोग नजर आते हैं वे अक्सर संघर्ष के दिनों में गुम हो जाते हैं। अब ऐसे लोगों को चिन्हित किया जाये और आगे बढ़ाया जाये जो पार्टी की विचारधारा के प्रति समर्पित हैं और संगठन को मजबूत बनाने के लिए काम करना चाहते हैं। कहने और सुनने में यह बात बड़ी अच्छी लगती है लेकिन ऐसा करना आसान नहीं होगा, क्योंकि अनेक कांग्रेस नेताओं की अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग है, इन सभी को एक सुर में बांध पाना हरीश चौधरी के लिए कहां तक संभव होगा यह देखने वाली बात होगी, क्योंकि 18 साल से अधिक के सत्ता के सूखे ने अनेक कांग्रेस कार्यकर्ताओं को अपनी सुविधानुसार नए रिश्ते बनाने का रास्ता दे दिया था। ऐसे लोगों को फिर से हरीश चौधरी कैसे राह पर लाते हैं यही उनकी नेतृत्व क्षमता की कसौटी होगी। उन्होंने संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने पर जोर दिया है। चुनावी राजनीति में वही पार्टी और उम्मीदवार बाजी मार लेता है जिसकी बूथों पर मजबूत पकड़ होती है। जिले के प्रभारियों व जिला अध्यक्षों के साथ भी चौधरी ने चर्चा की और उनसे संगठन की गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। हरीश चौधरी का इस बात पर विशेष जोर था कि सरकार की जन-विरोधी नीतियों के विरुद्ध जन-आंदोलन किया जाये और संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत बनाया जाये। यह भी निर्णय किया गया कि कांग्रेस कार्यकर्ता प्रत्येक जिले व विकासखंड स्तर पर आम जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को उठायेंगे और सरकार की असफलताओं को उजागर करेंगे। यह काम इतना आसान नहीं है क्योंकि कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जनता और मैदान से कटकर नेताओं के ड्राइंग रुम तक अपने को सीमिति कर लिया है। चौधरी का कहना था कि महंगाई, बेरोजगारी, किसान और आदिवासी हितों, महिला सुरक्षा और लोकतांत्रिक अधिकारों को लेकर आने वाले दिनों में आंदोलन किए जायेंगे। जनता के बीच कांग्रेस की नीतियों को मजबूती से रखा जायेगा। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार का कहना था कि कांग्रेस जनता की आवाज बनकर उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ेगी।

और यह भी

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी जिलों मे दौरा करके पार्टीजनों से सीधा संवाद करेंगे और हालात का जायजा लेंगे। प्रवास के दौरान बूथ स्तर पर बैठकें होगी, जिनमें कार्यकर्ताओं के फीडबैक के आधार पर संगठन की नब्ज टटोली जायेगी। विधानसभा स्तरीय बैठकें भी होंगी जिनमें पार्टी के विधायक, पूर्व विधायक, जिला पदाधिकारी हिस्सा लेंगे जिनसे जिलों में संगठन की गतिविधि को लेकर फीडबैक लिया जायेगा। इसके निष्कर्ष ही जिला व ब्लाक इकाइयों में प्रस्तावित परिवर्तन का आधार बनेंगे। देखने वाली बात यही होगी कि क्या पूरी पारदर्शिता के साथ हरीश चौधरी अपने काम और इरादों को अंजाम दे पायेंगे।

पालतू कुत्ता घुमाने की बात पर विवाद

युवती से हाथापाई, परिजन से गाली-गलौज, दूसरे पक्ष ने भी लगाया मारपीट का आरोप, दोनों पर केस

इंदौर (नप्र)। इंदौर के मल्हारगंज थाना क्षेत्र में कुत्ता घुमाने की बात पर विवाद हो गया। विवाद में युवकों ने युवती के साथ गाली-गलौज कर दी। इधर, घटना के बाद दोनों पक्ष थाने पहुंचे और मामले में एक-दूसरे खिलाफ केस दर्ज कराया। मल्हारगंज पुलिस के मुताबिक घटना रामगंज जिंसी स्थित खाली प्लाट की है। यहां पर एक युवती ने नंदलाल शर्मा, पीयूष और अन्य खिलाफ केस दर्ज कराया है। युवती ने पुलिस को बताया कि प्लाट पर डॉग को घुमा रही थी। तभी पड़ोस में रहने वाले युवकों ने कहा कि प्लाट हमारा है यहां डॉग क्यों घुमा रही हो। उन्होंने युवती का हाथ मोड़ दिया और गाली-गलौज करने लगे। युवती के चिल्लाने की आवाज सुन परिजन आए तो युवकों ने उनके साथ भी गाली-गलौज कर ईंट से मारने का प्रयास किया। इधर, नंदलाल शर्मा की शिकायत पर पुलिस ने राम यादव, केशव यादव, श्याम यादव और रितेश यादव के खिलाफ कायमी की है। नंदलाल ने शिकायत करते हुए बताया कि उनके बेटे ने केशव यादव को बोला कि तुमने हमारी खिड़की पर गाय क्यों बांधी इस बात को लेकर उनका विवाद हो गया। विवाद बढ़ता देख केशव के साथ राम, श्याम और रितेश आ गए और उन्होंने पीयूष और नंदलाल के बेटे के साथ गाली-गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। उन्होंने डंडे से भी मारपीट की और दो पहिया गाड़ी में भी तोड़फोड़ की। पुलिस ने दोनों की शिकायत पर विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

एमडी ड्रग्स मामला, आरोपी के विदेश भागने की आशंका

क्राइम ब्रांच को कोर्ट ने दिया आरोपी का पासपोर्ट जमा करने का आदेश

इंदौर (नप्र)। कोर्ट ने इंदौर क्राइम ब्रांच को आरोपी का पासपोर्ट जमा करने का आदेश दिया है। दरअसल, इंदौर क्राइम ब्रांच ने अवैध मादक पदार्थ के मामले में कार्रवाई करते हुए आमिर गौरी (निवासी इंदौर) और अयान खान को 88 ग्राम एमडी ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया था। इसके अलावा, एक नाइजीरियन नागरिक समेत दो अन्य आरोपियों को 28 ग्राम एमडी ड्रग्स के साथ पकड़ा गया था। इस प्रकार, कुल चार आरोपियों को गिरफ्तार कर 116 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की गई थी। इस मामले में आरोपी आमिर गौरी को जमानत पर रिहा कर दिया गया था। हालांकि, उसके विदेश भागने की आशंका को देखते हुए क्राइम ब्रांच इंदौर ने कोर्ट में उसका पासपोर्ट जब्त करने का आवेदन दिया था। सुनवाई के दौरान आरोपी ने दुबई और सऊदी अरब में अपने व्यवसायिक कार्यों के सिलसिले में यात्रा आवश्यक बताते हुए पासपोर्ट जब्त न करने की अपील की। लेकिन कोर्ट ने मामले की गंभीरता और आरोपी के पूर्व के विदेश यात्राओं को ध्यान में रखते हुए उसका पासपोर्ट जमा कराने का आदेश दिया। अब क्राइम ब्रांच द्वारा पासपोर्ट जब्त करने की प्रक्रिया जारी है। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच, राजेश दंडोतिया ने बताया कि, आरोपी केवल कोर्ट की अनुमति से ही किसी धार्मिक या व्यवसायिक यात्रा पर जा सकेगा।

मार्च के शुरुआती 4 दिन बढ़ेगा तापमान

फरवरी के आखिरी दिन 35 डिग्री रहा पारा, पिछले साल 1 मार्च को बरसा था पानी

इंदौर (नप्र)। इंदौर में इस बार फरवरी के आखिरी चार दिन मौसम काफी गर्म रहा। इस दौरान लगातार तापमान बढ़ा और आखिरी दिन तापमान 35 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। आज से मार्च माह शुरू हो रहा है। मौसम वैज्ञानिकों का मानना है कि माह के शुरुआती चार दिन मौसम गर्म ही रहेगा। फिर मौसम बदलेगा। पिछले साल 1 मार्च को हल्की बारिश हुई थी। दरअसल इंदौर में फाल्गुन माह का समय ठंड से गर्मी के मौसम में परिवर्तन का समय होता है। इस माह में तापमान रोज बढ़ता जाता है। इस दौरान सतही हवाएं हल्की और दिशा में परिवर्तनशील होती हैं। उत्तर भारत से होकर जाने वाले वेस्टर्न डिस्टरबेंस के प्रभाव से कभी-कभी बादल भी छा जाते हैं। कभी-कभी दोपहर बाद हवाएं तेज हो जाती है। इस माह में अधिकतम और न्यूनतम तापमान का अंतर बहुत ज्यादा होता है। माह के अंत तक अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक पहुंच जाता है।

रातभर में हटाई गई सौ मीटर बीआरटीएस-रैलिंग

इंदौर (नप्र)। इंदौर में शुक्रवार रात 11.30 बजे से बीआरटीएस (बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम) को हटाने का काम शुरू हो गया है। हाईकोर्ट के आदेश के बाद रात में नगर निगम के 50 अधिकारियों-कर्मचारियों की टीम जीपीओ चौराहे पर जमा हुई। पहले दिन करीब 7 घंटे शनिवार सुबह 6 बजे तक काम चला। जोन क्रमांक 11 के जोनल अधिकारी गीतेश तिवारी ने बताया कि नगर निगम की टीम ने जीपीओ से शिवाजी वाटिका की ओर करीब सौ मीटर की रैलिंग हटा दी गई। बाकी हिस्से की रैलिंग आज रात से हटाई जाएगी।

अब 11 किमी के रास्ते पर बॉटलनेक जैसी जगह नहीं रहेगी

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि 11 किमी का बीआरटीएस हटने के बाद बीच में बॉटल नेक जैसी कोई जगह नहीं रहेगी। पूरा रोड करीब 60 मीटर चौड़ा हो जाएगा। बीच में जहां सरकारी विभागों की दीवारें हैं उन्हें हटाकर सड़क चौड़ी की जाएगी। सड़क के दोनों ओर से बसें चलाई जाएंगी।

बसों की संख्या भी बढ़ाएंगे

महापौर ने कहा कि बीआरटीएस पर बसें बंद नहीं होंगी। पूरे शहर में इंटरसिटी बसों का जाल बिछाने के लिए हम निर्णय ले चुके हैं। शहर में 900 बसें चलाई जाना हैं। केंद्र और राज्य सरकार की मदद से 500 बसों का प्रस्ताव मंजूर हो चुका है। 400 और बसों के लिए भी हम प्रयास कर रहे हैं।

अब 60 मीटर चौड़ी होगी एबी रोड, बसें भी बढ़ाएंगे; बड़े चौराहों पर बनेंगे फ्लाइओवर

बीआरटीएस पर जहां से स्टेशन हटाए जाएंगे उसके आसपास ही दूसरे स्टेशन भी बनाए जाएंगे। ताकि यात्री वहां से टिकट ले सकें। सड़क के दोनों ओर बस स्टैंड भी बनाएंगे। यहां से दूसरे लोक परिवहन जैसे ई रिक्शा और रिक्शा की कनेक्टिविटी भी बढ़ाई जाएगी।गैस कटर से लोहे की रैलिंग हटाई जा रही है। इसके बाद बीच के डिवाइडर को जेसीबी कटर से हटाया जा रहा है। रैलिंग हटाने के बाद डिवाइडर को तोड़ा गया। यही प्रक्रिया पूरे बीआरटीएस पर अपनाई जाएगी। डिवाइडर के बीच से निकलने वाले लोहे के सरिये को गैस कटर से काटा जाएगा। बीआरटीएस हटाने की कार्रवाई के दौरान अफसर और 50 से ज्यादा कर्मचारी शुक्रवार रात डटे रहे। मलबा भी हाथों हाथ हटाते गए।

तीन स्टेशन भी प्रभावित होंगे

शिवाजी वाटिका से नवलखा चौराहे के बीच तीन बस स्टेशन भी हैं। डिवाइडर और रैलिंग हटाने के बावजूद इन्हें अभी नहीं हटाया जाएगा। यहां से यात्रियों को चढ़ने व उतरने में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए नगर निगम बेरिकेडिंग भी करेगा। बस स्टेशन हटाने का काम निजी एजेंसी को दिया जाना है। यह एजेंसी ही बस स्टैंड हटाने के साथ यहां का पूरा कम्प्यूटराइज्ड सिस्टम भी हटाएगी।

महापौर बोले- पूरे प्रोजेक्ट में 3-4 महीने लगेंगे

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने मीडिया से कहा कि इसे हटाने का पूरा काम यह तकनीकी रूप से एजेंसी तय करके किया जाएगा। बीच-बीच में बने स्टेशनों पर लगे सॉफ्टवेयर और हार्डवेअर हटाए जाएंगे। स्क्रीन भी हटाई जाएगी। पूरा तोड़कर ठीक से रोड बनाने में कम से कम चार माह का समय प्रस्तावित है। इसके लिए नगर निगम मद से खर्च किया जाएगा। लेकिन मलबे से नगर निगम को इनकम भी होगी।

दो जनहित याचिकाएं दायर हुई थीं, दोनों पर साथ चली सुनवाई

बता दें कि इंदौर में निरंजनपुर से राजीव गांधी प्रतिमा तक करीब 11.5 किमी लंबा बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (बीआरटीएस) बना हुआ है। इसे लेकर दो जनहित याचिकाएं हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ में लगी थी। याचिकाओं को हाईकोर्ट की मुख्य पीठ (जबलपुर) ट्रांसफर कर दिया गया था। जबलपुर हाईकोर्ट ने इंदौर बीआरटीएस को हटाने के आदेश दिए हैं।

डिजिटल अरेस्ट का तीसरा आरोपी गिरफ्तार

दुबई की फ्लाइट में बैठने की थी तैयारी, चेन्नई एयरपोर्ट से पकड़ाया

इंदौर (नप्र)। इंदौर क्राइम ब्रांच ने सॉफ्टवेयर डेवलपर युवती को फर्जी डिजिटल अरेस्ट करने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। वह चेन्नई से दुबई भागने की तैयारी में था, लेकिन फ्लाइट में बैठने से पहले ही उसे पकड़ लिया गया। अब उसे इंदौर लाकर पूछताछ की जा रही है। इस मामले में पहले ही दो आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं। मई 2024 में इंदौर की सॉफ्टवेयर डेवलपर मानसी के साथ यह घटना हुई थी। आरोपियों ने उसे दो दिन तक डिजिटल अरेस्ट कर रखा और उसके खाते से 12 लाख रुपये ट्रांसफर करा लिए। शिकायत मिलने पर क्राइम ब्रांच ने कार्रवाई करते हुए आनंद कुमार (निवासी झालावाड़) और के. कृष्ण कुमार (निवासी साइबराबाद, तेलंगाना) को गिरफ्तार किया। पूछताछ में तीसरे आरोपी का नाम सामने आया।

लुकआउट सर्कुलर से हुई गिरफ्तारी

एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि तीसरा आरोपी वेंकट नागार्जुन रेड्डी (निवासी सईदाबाद) की तलाश में दो बार दबिश दी गई, लेकिन वह नहीं मिला। इसके बाद उसका लुकआउट सर्कुलर जारी किया गया। इसी के चलते जानकारी मिली कि वह चेन्नई एयरपोर्ट से दुबई भागने की फिराक में है। क्राइम ब्रांच की टीम ने तुरंत वहां

पहुंचकर उसे गिरफ्तार कर लिया और प्रोडक्शन वारंट पर इंदौर लाई।

आरोपी के खाते में 10 लाख, दुबई में भी पार्टनर- पूछताछ में सामने आया कि रेड्डी के खाते में ठगी के 10 लाख रुपए पहुंचे थे। वह कमीशन पर नहीं, बल्कि पार्टनर के रूप में काम करता था। उसने कबूल किया कि उसके कुछ साथी दुबई में हैं, इसी वजह से वह भी वहां भागने वाला था।

देशभर में अपराध, तीन केस दर्ज- दंडोतिया ने बताया कि आरोपी पर साइबराबाद में दो और नामपल्ली, हैदराबाद में एक केस दर्ज है। वह पहले भी गिरफ्तार हो चुका है और दो मामलों में अग्रिम जमानत पर बाहर था। इसके अलावा, वह हरियाणा, चंडीगढ़ और यूपी में भी वांछित है। उससे और जानकारी जुटाई जा रही है।

ब्रह्माकुमारीज का 'इंटरनेट से इनर नेट' टॉक शो 16 मार्च को

इंदौर(नप्र)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के युवा प्रभाग ने एक विशेष कार्यक्रम की घोषणा की है। यह कार्यक्रम 16 मार्च को शाम 6 बजे इंदौर के न्यू पलासिया स्थित ज्ञानशिखर, ओमशांति भवन में आयोजित किया जाएगा। इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी ने कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में युवाओं के आध्यात्मिक विकास पर ध्यान दिया जाएगा। साथ ही डिजिटल दुनिया में संतुलन और सकारात्मक जीवनशैली पर चर्चा होगी। कार्यक्रम में कई प्रमुख वक्ता शामिल होंगे। अहमदाबाद से युवा प्रभाग की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा राजयोगिनी चंद्रिका दीदी और राष्ट्रीय समन्वयक ब्रह्माकुमारी कृति बहन पधारेंगी। माउंट आबू से अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता और मेमोरी ट्रेनर ब्रह्माकुमार शक्तिराज सिंह भी उपस्थित रहेंगे। इसी दिन शाम 4 बजे स्पिरिचुअल कैफे नामक एक विशेष राउंडटेबल कॉन्फ्रेंस भी आयोजित की जाएगी। इसका विषय भावनात्मक स्थिरता आध्यात्म के द्वारा रखा गया है।

सेव-नुक्ती के विवाद में युवक की हत्या

भंडारे में खाने के दौरान हुआ था झगड़ा, तीन पर पुलिस ने किया केस दर्ज

इंदौर (नप्र)। इंदौर में सेव-नुक्ती को लेकर हुए विवाद में एक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। शनिवार को पुलिस ने एमवाय अस्पताल में मृतक का पीएम करवाया। मामले में तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी हैं। परदेशीपुरा टीआई आरडी कानवा ने बताया कि घटना परदेशीपुरा थाना क्षेत्र के कुलकर्णी भट्ठा की है। स्थानीय लोगों ने मिलकर महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में भंडारा रखा था। इस आयोजन में धर्मेंद्र उर्फ गोलू (30) पिता मदनलाल निवासी कुलकर्णी का भट्ठा और उसका छोटा भाई देवेंद्र प्रसाद खाने आए थे। तभी यहां सेव नुक्ती को लेकर विवाद हो गया, जिसमें बात मारपीट तक पहुंच गई।

मौजूद कुछ लोगों ने दोनों पक्षों को समझाकर अलग किया और अपने-अपने घर भेज दिया। इसके बाद करीब 8 बजे धर्मेंद्र वापस लौटा तब आरोपियों से उसका फिर से विवाद हो गया। आरोपियों ने चाकू से उसके पेट में वार कर दिया।

इंदौर से गोवा-पुणे के लिए नई उड़ान की मंजूरी

एयर इंडिया एक्सप्रेस इस माह से करेगी शुरुआत; एयरलाइंस ने बुकिंग शुरू की

इंदौर (नप्र)। इंदौर से गोवा जाने वाले यात्रियों के लिए अच्छी खबर है। शनिवार से शुरू हुए मार्च माह में इंदौर से गोवा के लिए एक नई उड़ान शुरू होने वाली है। एयर इंडिया एक्सप्रेस गोवा के लिए उड़ान शुरू करेगी। इस उड़ान का संचालन नार्थ गोवा के मनोहर पर्रिकर इंटरनेशनल एयरपोर्ट से होगा। अभी इंडिगो इंदौर से गोवा के बीच में एक डेली उड़ान का संचालन करती है। यह उड़ान साउथ गोवा के डेंबोलिंब एयरपोर्ट के लिए संचालित होती है। ट्रैवल एजेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया

के प्रदेश (टाफी) अध्यक्ष टीके जोस ने बताया कि एयर इंडिया एक्सप्रेस के अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है। फ्लाइट को लेकर डीजीसीए डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन से इसकी अनुमति भी आ गई है। संभवतः मार्च माह के दूसरे सप्ताह से इसकी शुरुआत होगी। कंपनी जल्द ही इसकी बुकिंग शुरू करेगी। जोस ने बताया कि इंदौर से विमान सुबह 10 बजे रवाना होगा और 11.35 पर गोवा पहुंचेगा। वहां से दोपहर 12.10 पर रवाना होकर 1.45 पर इंदौर पहुंचेगा। इसके लिए एयर इंडिया एक्सप्रेस नए एयरक्राफ्ट का उपयोग करेगी। जिसमें बिजनेस क्लास की सुविधा भी होगी। जोश ने बताया कि इससे यात्रियों को काफी राहत मिलेगी। अभी एक उड़ान होने से यात्रियों को ज्यादा किराया देना पड़ता है।

12 महीने रहती है मांग

जोस ने बताया कि इंदौर से गोवा के लिए 12 महीने यात्री जाते हैं। पहले मानसून सीजन में लोग गोवा जाना पसंद नहीं करते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं रह गया है। सीजन के समय तो कई बार एक ओर का किराया 20 हजार तक पहुंच जाता है। कोविड के पहले एयर एशिया भी इंदौर से गोवा के लिए फ्लाइट का संचालन करती थी, लेकिन बाद में यह उड़ान बंद हो गई और एयर एशिया ने इंदौर से संचालन ही बंद कर दिया।

इंदौर से पुणे भी होगी शुरू- इंदौर से पुणे के लिए एयर इंडिया एक्सप्रेस द्वारा 30 मार्च से सीधी उड़ान शुरू की जा रही है। विमान कंपनी ने उड़ान की घोषणा करते हुए बुकिंग शुरू कर दी है। यह उड़ान दिल्ली से इंदौर आकर पुणे जाएगी। वहीं वापसी में यह उड़ान पुणे से इंदौर नहीं आएगी। देवी अहिल्याबाई होलकर एयरपोर्ट से समर सीजन में कई शहरों के लिए सीधी उड़ानें शुरू हो सकती है।

व्यंग्य

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'
लेखक व्यंग्यकार हैं।

जबान की रफ्तार और घोड़े की लगाम

आदमी की सबसे बड़ी खोज क्या है? चक्का? बिजली? अंतरिक्ष यान? नहीं साहब, उसकी सबसे बड़ी खोज है घोड़े की लगाम! घोड़ा इधर-उधर भटके, बगल में खड़ा होकर हरी घास चबाने लगे, या भूल से गलत गली में घुस जाए, तो बस एक झटके में रास खींचो और उसे सीधा कर दो। लेकिन अपनी जबान? अरे, उसे तो बेलगाम छोड़ रखा है, जैसे कोई जंगली घोड़ा हो जो न सवार की सुनता हो, न रास्ते की परवाह करता हो। घोड़े की लगाम कसने में तो उस्ताद है इंसान, लेकिन अपनी जुबान पर लगाम? वो तो बस सपने की बात है–सपना भी ऐसा जो सुबह होते ही टूट जाए और बिस्तर पर सिर्फ खाली तकिया रह जाए।

दुनिया के हर कोने में चले जाइए–गली, मोहल्ला, बाज़ार, दफ्तर, या संसद का मैदान–हर जगह आपको घोड़े से ज़्यादा बेलगाम जबानें दौड़ती नज़र आएँगी। कोई किसी की इज्ज़त को चटनी की तरह पीस रहा है, तो कोई किसी के चरित्र को कचरे के ढेर में बदल रहा है। और अगर सोशल मीडिया पर कदम रखें, तो लगेगा कि घोड़े की रेस तो पुरानी बात हो गई, अब असली दौड़ है कीबोर्ड की उंगलियों और जुबान की रफ्तार की! यहाँ हर शख्स खुद को शब्दों का सिकंदर समझता है। तथ्य चाहिए? अरे, वो किस खेत की मूली है! प्रमाण चाहिए? उसकी क्या ज़रूरत! बस बोल दो, ट्वीट कर दो, मीम बना दो, ट्रोल कर दो–जुबान की लगाम तो ढीली ही रहने दो, घोड़े को तो देख लेंगे बाद में।

अब ज़रा राजनीति के रणक्षेत्र में झाँकिए। यहाँ तो शब्दों की तलवारें ऐसी चलती हैं कि असली तलवार भी शरमा जाए। चुनाव का मौसम आए नहीं कि नेताओं की जबानें बेलगाम घोड़ों की तरह दौड़ पड़ती हैं। एक-दूसरे पर तंज कसना, झूठे वादों की बारिश करना, और वोटरों को सपनों के महल दिखाना–इन सब में इनकी जबान को कोई रोक नहीं सकता। मज़े की बात ये कि अगर घोड़ा तेज़ भागे तो उसे काबू करने के लिए पूरा ज़ोर लगा देंगे, लेकिन जबान की रफ्तार? उसे तो और हवा मिले, तभी तो शान बढ़े! हमने तो ऐसा बोल दिया कि हवाएँ थम गईं–वाह रे वाह, ऐसा गर्व कि घोड़ा भी सोचे, मुझ पर इतना भरोसा क्यों नहीं करते ये लोग?

घर की बात करें तो वहाँ भी यही तमाशा है। सास-बहू की तू-तू-मैं-मैं हो या भाई-भाई का हिसाब-किताब, सब जुबान की मेहरबानी से। एक बार कुछ उल्टा-सीधा बोल दिया, फिर चाहे रिश्ते टूटें, घर बिखरे, या सालों की दोस्ती धूल में मिल जाए–कोई गम नहीं। घोड़ा अगर गिर जाए तो उसे उठाने की फिक्र होगी, लेकिन जुबान का गिरना? अरे, आजकल तो उस पर मेडल मिलता है–मैं जो सोचता हूँ, वही बोलता हूँ, मुझे किसी की परवाह नहीं! शाबाश, ऐसी बेलगाम जबान पर गर्व कि घोड़ा भी मुड़कर देखे और कहे, भाई, मुझे तो कम से कम लगाम मिली है, तुम्हारा क्या हाल है?

और सोशल मीडिया? ये तो बेलगाम जबानों का असली अड्डा है। सुबह आँख खुलते ही लोग शब्दों के तीर-कमान लेकर मैदान में कूद पड़ते हैं। कोई सरकार को कोस रहा है, कोई समाज को सबक सिखा रहा है। कोई किसी फिल्म स्टार की निजी ज़िंदगी में घुसकर कीचड़ उछाल रहा है, तो कोई किसी अनजान इंसान की इज्जत को सरेराह नीलाम कर रहा है। स्क्रीन की आड़ में ये लोग शब्दों के गोले दागते हैं, मानो दुनिया का हर दुख इन्हीं की जुबान से ठीक होगा। लेकिन हाँ, घोड़े की लगाम कसने में एक सेकंड की देरी नहीं करेंगे–आखिर असली मर्दानगी तो घोड़े को काबू करने में है, जुबान को कौन पूछता है?

अब घोड़े की नज़र से देखें तो बेचारा क्या सोचेगा? सुबह से शाम तक इंसान का बोझ ढोता है, उसकी मर्ज़ी से दौड़ता है, लगाम खिंचवाता है। अगर ज़रा सा बगावत करे, तो कोड़े पड़ते हैं, सज़ा मिलती है। लेकिन जब इंसान अपनी जबान से किसी का गला घोंट दे, किसी का घर उजाड़ दे, तो उसे ईमानदार और निडर का तमगा मिल जाता है। घोड़ा सोचता होगा, काश मेरी भी जबान होती, मैं भी कुछ बोलता, शायद तब ये लोग मुझे कम सताते।

ये विडंबना नहीं तो क्या है? इंसान ने चाँद को छू लिया, समुद्र को चीर दिया, मशीनों को गुलाम बना लिया, लेकिन अपनी जबान को काबू करना उसे आज तक नहीं आया। घोड़े को कंट्रोल कर सकता है, ट्रैफिक को मैनेज कर सकता है, मौसम का हाल बता सकता है, लेकिन अपनी जुबान? वो तो आज़ाद परिंदा है–जहाँ चाहे उड़े, जिसे चाहे चोंच मार दे।

समाज में नियम-कायदे ढेर सारे हैं। गाड़ी की स्पीड लिमिट है, दफ्तर में ड्रेस कोड है, स्कूल में होमवर्क का बोझ है। लेकिन जबान की रफ्तार के लिए? कोई नियम नहीं, कोई लगाम नहीं। घोड़े को काबू करने की ट्रेनिंग स्कूलों में नहीं सिखाई जाती, लेकिन उसकी लगाम कसने का हुनर हर कोई जानता है। पर अपनी जबान को काबू करना? वो तो कोई किताब में नहीं लिखा, न कोई गुरु सिखाता है।

कभी-कभी सोचता हूँ, काश इंसान अपनी जबान को भी घोड़े की तरह कंट्रोल करना सीख लेता। काश उसे अहसास होता कि शब्दों से किसी की ज़िंदगी बन भी सकती है और बिगड़ भी सकती है। काश वो घोड़े की लगाम कसने से पहले अपनी जबान पर भी एक नज़र डाल लेता। लेकिन ये सब सोचकर क्या फायदा? इंसान वही करेगा जो उसकी फितरत है–घोड़े की लगाम कसेगा, और अपनी जबान को आज़ाद छोड़ेगा। और घोड़ा बेचारा दूर खड़ा ये सब देखता रहेगा, सोचता रहेगा–काश ये लोग अपनी जबान पर भी वही लगाम कस पाते, जो मेरे मुँह में डालते हैं!

गज़ल

मोहन वर्मा

(1)

हम कितने बुरे है,हमें भी तो बताओ यारों
आईने में हमें हमारी शक्ल दिखाओ यारों।

आप पाक दामन हैं,मसीहा हैं ये माना हमने
नेक दिल कैसे बनें हमको भी सिखाओ यारों।

इस बुरी दुनिया में, सब आपसे होते हैं कहाँ
हम भी बनना चाहते हैं आपसे,बनाओ यारों।

हम भी इंसा हैं, सुधारेंगे गलतियाँ अपनी
आप भी इंसा हैं, यों दूर तो न जाओ यारों।

जिंदगानी का सफर - यों तो बहुत छोटा है
हमकदम बनके थोड़ा साथ तो निभाओ यारों।

(2)

दूर कहीं एक दिया सा टिमटिमाता है।
कुछ उजाला इधर भी नजर आता है।।

रोशनी बहुत ही ज़रूरी है जीने के लिये
घोर अंधेरे को जुगनू भी निगल जाता है।।

ठोकरें भी जरूरी है चलने के लिए
ठोकरें खा के इन्सान सम्भल जाता है।।

तक़दीरो के खेल भी अज़ब है साहब
नहीं नसीब में,दिल है कि वही चाहता है।।

ख्यालों में भी रहे गर अपने, हसी मंजर
चंद लम्हे ही सही,दिल तो बहल जाता है।।

लघुकथा

सुरेश सौरभ

शिष्ट लोग

कंपकपाते हाथों से अभी एक कौर मुंह में डाला ही था तभी हटो हटो हटो.ऽऽऽ..उधर खाओ जाकर बड़ी भीड़ लगा रखी है, यह भी नहीं देखना कहां खा रहे....÷उसने अपना दोना, संभाला और दूसरी ओर ले जाकर खाने लगा। उसकी आंखों में कोई नमी तैर गयी।

खाते वक्त किसी कुत्ते को भी नहीं भगाना चाहिए। अरे! उस पूड़ी वाले की रेहड़ी के किनारे, थोड़ा गुनगुनी धूप में, उनकी दुकान के करीब साइकिल के कैरियर पर दोना रखे खा रहा था, कोई गुनाह कर रहा था ? आज पत्नी जीवित होती, बहू समय से खाना बनाकर देती तो यूं...बूढ़े की दिमागी नसें चटखने लगीं। ललाट पर शिकन की सिलवटें आ गईं। जल्दी-जल्दी पूड़ी-सब्ज़ी खत्म करने लगा जैसे उसकी ट्रेन छूट रही हो।

कविता

यह ग़ज़ल नहीं

कमलेश कुमार दीवान

फिर यूं कहा है किसी ने, पर ये भी ग़ज़ल नहीं
असरार शब्द ताल है सब, पर ये भी ग़ज़ल नहीं !

छोटी बड़ी बहर काफिया भी और है रदीफ भी
लिखें हैं भाव, बड़े भाव से पर ये भी ग़ज़ल नहीं !

पूरा गणित भी है कहन में लहजे से गायिकी
कुछ भी नहीं कमी है पर ये भी ग़ज़ल नहीं !

हमको भी खिताब चाहिए उस्ताद से 'दीवान'
लिखते ही वे कहते हैं पर ये भी ग़ज़ल नहीं !

लघुकथा

श्रद्धा जलज घाटे

गुलाल की पुड़िया

देवा अपनी बूढ़ी मां को कुंभ स्नान करवाकर रिक्शे से उतरा ही था कि उसका ध्यान सामने वाले तिवारी जी के घर पर बने नवनिर्मित छोटे से ओटले पर गया। यूँ तो ओटला उनकी हद में ही था,पर अब वहाँ उनके स्कूटर रखने जितनी ही जगह बची थी।वह सोचने लगा कि तिवारी जी के मेहमान अब स्कूटर उसके घर के सामने रखेंगे...

उसका मन गुस्से से भर गया। उसने तिवारी जी के यहां आना-जाना छोड़ दिया।उनसे बातचीत बंद कर दी।वह ताक में रहने लगा कि उनके घर कोई मेहमान आए और अपना स्कूटर उसके घर के सामने रखे और वह दो-चार खरी-खोटी सुनाकर अपने मन की भड़ास निकाल सके।

देखते ही देखते होली के दिन आ गए।होली का डंडा गढ़ गया।देवा की स्मृतियों में पुराने वर्षों की होली जीवंत हो उठी। दो साल पहले की होली पर जब उसका अपना बोरिंग पंप खराब हो गया था, रंग में सराबोर उसने तिवारी जी के यहाँ ही जाकर स्नान किया था।यही नहीं,पिछली होली पर उसके पिता के निधन के बाद 'शोक की होली' होने पर वही तो सबसे पहले मिठाई लेकर आए थे।

विगत याद आते ही उसके मन का मैल घुल गया, गुस्सा बर्फ की तरह पिघल गया।देवा ने तत्काल गुलाल की पुड़िया उठाई और उसके कदम तिवारी जी की घर की तरफ उठ गए।

पुस्तक समीक्षा

यशवंत कोठारी
समीक्षक

पानी का पंचनामा- पानी को बचाओ तंत्र को नहीं

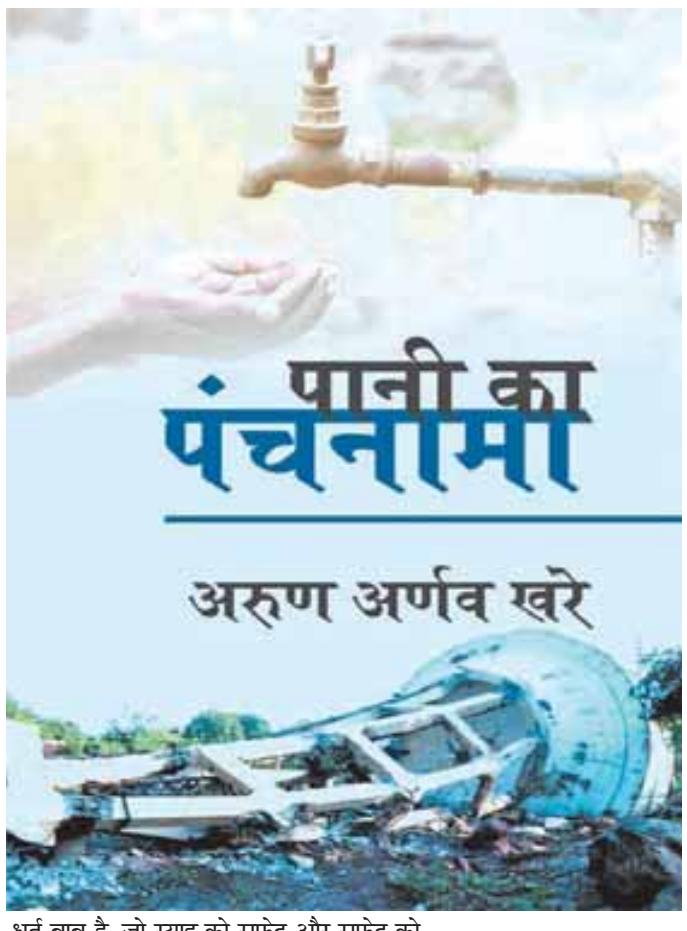

पानी खुदा की नियामत है, प्रकृति का वरदान है लेकिन मानव व उसके निर्मित तंत्र ने खुद को बचाने के लिए पानी की हत्या कर दी। पानी को आम जन तक पहुँचाने के लिए मानव ने एक तंत्र बनाया और उसी तंत्र की कहानी है अरुण अर्णव खरे का एक मासूम उपन्यास - पानी का पंचनामा, जिसे व्यंग्य-उपन्यास कहने में लेखक ने संकोच किया है। कभी भीष्म सहनी ने चीफ की दावत कहानी लिख कर इस तंत्र का पर्दा फाश किया था। लेखक स्वयं इंजीनियर रहे हैं सब कुछ देखा समझा है इसलिए उनका लेखन प्रमाणिक है। उनका पूर्व का उपन्यास कोचिंग,कोटा ने भी काफी प्रशंसा बटोरी है, लेकिन यह रचना एक अलग धरातल की है।

पानी याने जल पञ्च महाभूतों में से एक है। पानी की एक बूंद का भी मनुष्य ने आज तक निर्माण नहीं किया फिर भी इसे व्यापार बना दिया, मानव रचित व्यवस्था ने। यह कथा मंगल प्रदेश की है जहाँ पर जल वितरण व्यवस्था के लिए लम्बा-चौड़ा विभाग है, मंत्री है, सचिव है, मुख्य अभियंता है, नीचे लाखों कारिंदे है जो अपने कन्धों पर सब कुछ लादे फिरने का नाटक करते हैं, करते कुछ नहीं। मंगल प्रदेश में सब कुछ अमंगलकारी है। वैसे यही कथा हर प्रदेश की है। मेरा निजी अनुभव भी यही है कि सबसे भ्रष्ट महकमा पानी का ही है।

जल मुफ्त का है केवल वितरण व्यवस्था का काम है। बस सब गोलमाल यही पर है। कथा का नायक एक जी. एल. नामक प्राणी है जो विभाग में यंत्री है, वो अपनी चालाकियों, धूर्तताओं से सब का कच्चा चिटठा खोलने के नाम पर अपना फायदा देखता है। एक विधवा को अनुकम्पा नियुक्ति देकर उसका शोषण करता है। विभाग के धूर्त बाबू है, जो स्याह को सफ़ेद और सफ़ेद को स्याह करने की हिम्मत रखते हैं। अफसर को मूर्ख समझते हैं। एक बाबू की टीप सब पर भारी पड़ती है। नलकूप में बच्चा गिर जाता है उसे जिन्दा निकालने के बाद उसकी मौत हो जाती है मगर विभाग को कोई फर्क नहीं पड़ता, उसकी मौत का भी मजाक बनाने का षडयंत्र किया जाता है। गर्मी के दिनों में जनता पानी के लिए त्राहि-त्राहि करती है मगर किसी के भी कानों पर जूं नहीं रेंगती। विभागीय घटिया राजनीति में सब एक दूसरे को नीचा दिखाने में व्यस्त है। मंत्री, सचिव, मुख्य यंत्री सब को अपना हिस्सा लेना बस। हर प्रदेश में भी यहीं सब चलता है। जल मिशन का पैसे कहाँ गया कोई नहीं बताता।

एक पत्रकार भी खबर की तलाश में सूचना के लिए पत्र देता है लेकिन जी. एल. उसे खरीद लेता है। कुछ गांधी छाप कागज़, महंगी शराब और एक विधवा अनुकम्पा नौकरी पाने वाली के सहारे सूचना का कागज़ उठा लिया जाता है। सचिव को वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से गलत सलत डेटा दे कर अधिनस्थों को फंसाया जाता है। यह उपन्यास जल विभाग की कमियों, विसंगतियों को सब के सामने लाता है। यह अफसरों, नेताओं, मातहतों, दलालों, ठेकेदारों के किस्से बताता है जो रोज़ हम अख़बारों में पढ़ते हैं। मानसिक, आर्थिक, व शारीरिक शोषण का दस्तावेज़ है यह उपन्यास। कलेवर छोटा है मगर कथानक आप को सोचने को मजबूर कर देगा। यहाँ यंत्री है, महिला का देह शोषण है, दावतें है, पैसा है, भ्रष्टाचार है, मुर्गा है, शराब है, बस नैतिकता के अलावा सब कुछ है। संविदा में काम करने वाले से लेकर ऊपर तक पूरा तंत्र गलत कामों में आकंठ डूबा हुआ है। सब अनजान है सब को सब कुछ पता है। प्रजातंत्र की आवश्यक बुराई।

इसे लेखक ने व्यंग्य उपन्यास नहीं माना है लेकिन उपन्यास में भरपूर व्यंग्य है। पञ्च भी है, कुछ उदाहरण देखे -

1. पहली बार मंत्री बने थे इसलिए पूरी तरह बेशर्म नहीं हुए थे।
2. इतनी तगड़ी प्लानिंग, प्लानिंग कमीशन को भी मात दे दी आपने।
3. किसी ने उनकी ईमानदारी में सेंध लगाने की कोशिश नहीं की तो वह परेशान रहने लगे। उनको ईमानदार रहने की पीड़ा सालने लगी।
4. कार्यशालाओं से लोग सीख जाते तो देश का कायाकल्प हो जाता, क्रांति आ जाती।
5. वह घोड़ा पछाड़ से पनियल साँप बन कर रह गया था।

भाषा पर लेखक की पकड़ अच्छी है इसे किताबघर की संस्था सुरभि ने छापा है। 176 पन्नों की यह किताब हिंदी साहित्य में अपना स्थान बना लेगी। कवर अच्छा है पेपर बेक होने से मूल्य 350 रुपया अधिक है। इन दिनों जो उपन्यास आ रहे हैं उनके विषय जटिल है लेकिन खरे जी ने एक सामान्य विषय को लिया है। हवा के बाद पानी ही सबसे जरूरी है और उसे ही पाना मुश्किल है जो प्रभु ने निशुल्क उपलब्ध कराया है। खरे जी को बिजली विभाग पर भी ऐसा ही एक उपन्यास लिखना चाहिए।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

माटी से जुड़ाव को अधीर मूर्त एवं अमूर्त कलाकृतियां

माटी जैसे गूढ़ शब्द को आधार बनाकर जिस कार्य को आगे बढ़ाने का वीणा उठाया जाएगा सफर निश्चित ही आनंद के साथ अनंत की ओर प्रवाहित होगा और यात्री अपने आप को ऐसे स्थान पर स्थापित कर लेगा जिसकी व्याख्या ही असंभव होगी। कला असंभव को भी संभव करने हेतु प्रतिबद्ध जान पड़ती है। कला की दुनिया भी असीम है, अनहद है हद जिसका। जहां रंग, रेखा, भाव, रूप, विषयवस्तु हर जगह पूरी संभावना है कल्पना के घोड़े पर सवार हो अनगिन मंजिलों की यात्रा पर निकल जाना, जहां कलाकार या दर्शक दोनों स्वतंत्र है अपने-अपने रूप और विचार के साथ अपने-अपने अलग-अलग यात्रा में निकल जाने हेतु। जहां मूर्तन की पराकाष्ठा है तो अमूर्तन की विशाऽऽ...ल एकपुंजीय रेखा में परिवर्तित होती आकृतियां जो एक विंदु में तब्दील होने को आतुर है और जहां से शुरू होगा ब्रह्मांडीय व्यवस्था सा कुछ जो मन के विशाल फलक पर अनायास ही पल-पल पर बदलती हुई तमाम कृतियों तक के सफर पर आपसे विलग और विषय से लगी रहेंगी।

माटी शब्द मन में आते ही जमीनी जुड़ाव की बात आ जाती है, मजबूत आधार और सतह के बाबत दिमाग घूमने लगता है, तमाम, झंझावातों, जीवटता से ओतप्रोत अनकहे से हजारों, करोड़ों या अगड़ित, अघटित कहानियां, किस्से जो मस्तिष्क के चारों ओर घूमने लगते हैं, जहां न चाहने वालों को भी जुड़ना पड़ता है अपने जड़ से या यूं कहें कि अपने आप को बचा ही नहीं सकते बिना इससे जुड़े, न जुड़ने के इच्छुक भी अनजाने ही सही पर अपने माटी से जरूर जुड़े होते हैं। बिना माटी के अस्तित्व ही नहीं है कहना गलत नहीं होगा। माटी जिस शब्द का कोई ओर और छोर नहीं है। जहां जीवन है, संघर्ष है, उत्थान है, अवसान है, रंग है तो बेरंग होते स्याह चेहरों सा संसार भी है। जहां भूत था तो वर्तमान भी है और जहां घटेगा भविष्य भी। माटी जैसे गूढ़ शब्द को आधार बनाकर जिस कार्य को आगे बढ़ाने का वीणा उठाया जाएगा सफर निश्चित ही आनंद के साथ अनंत की ओर प्रवाहित होगा और यात्री अपने आप को ऐसे स्थान पर स्थापित कर लेगा जिसकी व्याख्या ही असंभव होगी। कला असंभव को भी संभव करने हेतु प्रतिबद्ध जान पड़ती है। कला की दुनिया भी असीम है, अनहद है हद जिसका। जहां रंग, रेखा, भाव, रूप, विषयवस्तु हर जगह पूरी संभावना है कल्पना के घोड़े पर सवार हो अनगिन मंजिलों की यात्रा पर निकल जाना, जहां कलाकार या दर्शक दोनों स्वतंत्र है अपने-अपने रूप और विचार के साथ अपने-अपने अलग-अलग यात्रा में निकल जाने हेतु। जहां मूर्तन की पराकाष्ठा है तो अमूर्तन की विशाऽऽ...ल एकपुंजीय रेखा में परिवर्तित होती आकृतियां जो एक विंदु में तब्दील होने को आतुर है और जहां से शुरू होगा ब्रह्मांडीय व्यवस्था सा कुछ जो मन के विशाल फलक पर अनायास ही पल-पल पर बदलती हुई तमाम कृतियों तक के सफर पर आपसे विलग और विषय से लगी रहेंगी।

लगातार कई वर्षों से कला की दुनिया में कुछ विशेष करने की चाह लिए विमला आर्ट फोरम निरंतर सृजनात्मक कार्य में लगा हुआ है जिसका मूल मंत्र माटी से जुड़ाव है, जहां लोक कला है, आदिवासी कला है तो समय के साथ भागती दुनिया की कला के रूप में आधुनिकता का जामा ओढ़े आधुनिक विषयों, तकनीकों से ओत-प्रोत अमूर्तन भी है, जहां पिंक आयरन के माध्यम से ऐसे कृतियों को प्रदर्शित किया गया है कि देखते बने, जिसमें संघर्ष है, प्रवाह है, उन्माद है तो रंगों का स्वतंत्र, स्वच्छंद संयोजन भी है। आजाद रेखाओं का फलक पर विचरण की कहानी है, विंदुओं के सहगामी आचरण को दर्शाने का प्रयास भी है। पिंक आयरन का ये तीसरा संस्करण है तो वहीं माटी का दूसरा, जो विमला आर्ट फोरम के वार्षिक प्रदर्शन का एक

माध्यम है। विमला आर्ट फोरम जहां कृतियों के सृजन को कलाकार तैयार होते हैं, नये और सीखने वाले बच्चे धीरे-धीरे गम्भीर स्ट्रोक्स, हुनर के जानकार बनते हैं, जहां समय-समय पर तमाम ऐसे और भी कार्यक्रम किए जाते हैं जो उनके मनोबल और इच्छाशक्ति को बलवती बनाती है। वरिष्ठ एवं नये कलाकारों के बीच का संगम स्थल भी बना हुआ है विमला आर्ट फोरम, जो गुड़गांव में है और जिसके द्वारा आयोजित ये प्रदर्शनी ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसायटी में आयोजित हुई है। कलाकार दिलीप शर्मा जो विमला आर्ट फोरम के प्रेसिडेंट, कन्वेनर भी हैं तथा आर्ट फोरम के फाउंडर, ट्रस्टी कंचन मेहरा दोनों के अथक प्रयासों से आज ये संस्था कला के नये-नये प्रतिमान गढ़ रही है। बहुत ही कम समय में विमला आर्ट फोरम ने लाजवाब प्रदर्शन किया है। फिलहाल इस प्रदर्शनी को क्युरेट किया है चित्रकार एवं समीक्षक जय प्रकाश त्रिपाठी जी ने।

आइफेक्स के विशाल हॉल में प्रवेश करते ही बांए तरफ

वाले दीर्घा में आपकी मुलाकात माटी II से तथा दांए दीर्घा में पिंक आयरन III से होगी तो आइए शुरू करते हैं पहले माटी वाले दीर्घा से जहां कलाकार अजीत दूबे, अशोक भौमिक, बिपिन कुमार, दिलीप शर्मा, हरेन ठाकुर, कालीचरण, कमलकांत, स्वाती साबले, विश्वनाथ, यूसुफ, भुवनेश्वर भास्कर, प्रमोद प्रकाश, पंकज तिवारी सहित करीब पैंतालीस कलाकारों के कृतियों को प्रदर्शित किया गया है, जहां कलाकार अजीत दूबे के कृतियों में स्वतंत्र चेतना को उजागर करने की कुव्वत है, आधुनिक तत्वों का लोकशैली में लाजवाब प्रयोग है उनके कृतियों में बिल्कुल ही शांत भाव होने के बावजूद भी कृतियां बोल उठती हैं। आनंद डबली, मनहर कपाडिया, सतीश काले के कृतियों में रंगों का एक अद्भुत संसार है बारीक पैचेज के माध्यम से प्रकृति के विशाल फलक को अपने कैनवास पर जगह देना इन कलाकारों की खूबी बन गई है। रंगों के हल्के और गहरेपन का प्रभाव एक पर्सपेक्टिव लैंडस्केप का रूप लेता हुआ दर्शित होता है यहां।

कलाकार अनूप कुमार चांद, भगत सिंह, हरेन ठाकुर, हरीश श्रीवास्तव, विश्वनाथ साबले के कृतियों में मनुष्य, प्रकृति और सौंदर्यबोध के दर्शन हैं। कहीं-कहीं प्रकृति में हो रहे हास को भी दिखाया गया है। मनुष्य की वजह से जो प्रकृति प्रभावित हो रही है उसको भी देखा जा सकता है। भारी भरकम सत्ता पक्ष से प्रभावित निरीह जीव किस तरीके से अपने आशियाने को लेकर परेशान है, भी यहां दर्शित है। रंगों का धीरे-धीरे मटमैले रंग में बदलना कलाकार के दर्द को बयां करने हेतु काफी है।

अनवर, जावेद इकबाल, मयूर कैलाश के कृतियों में डार्क रंगों का प्रयोग है पर उसी में से झांकते चमकीले रंग छोटे-छोटे संकेतो, सिंबल्स, ज्यामितीय रंगों से खेलने का काम किया है इन कलाकारों ने। आकृतियां त्रिकोण, चतुर्कोण और राउंड के बीच झूल रही हैं। अशोक भौमिक के कृति में संवाद प्रकृति से, को देखा जा सकता है। रंगों का, आकृतियों का, भाव का खुला प्रवाह है उनके एवं बिपिन कुमार, कालीचरण गुप्ता के कृतियों में जबकि यूसुफ अपने अलहदा अंदाज के साथ ही प्रस्तुत हुए हैं, ये कलाकार आकृतियों पर किए गए लगातार स्टडी के वजह से अपने विशेष शैली के साथ उपस्थित हैं। कलाकार दिलीप शर्मा, रमेश विष्ट, पंकज शर्मा तथा पंकज तिवारी के कृतियों में ब्लैक रंगों का एक अद्भुत संसार है, एक अद्भुत शैली है इन सभी की अपनी, जिसके बल पर सृजन का एक अद्भुत विशाल परिप्रेक्ष्य तैयार होता है इन सभी के यहां। भाव की एक अलग दुनिया तैयार होती है, भावों के विशाल भंवर के बीच डूबना और उतराना होता है दर्शकों को इन सभी के कृतियों से संवाद हेतु। दर्शकों को विचारों के गहरी खाई में उतरना होगा, मानसिक पटल पर जोर देना होगा कृतियों से संवाद तभी संभव होगा।

मैजिक ऑफ माउंटेन शीर्षक के साथ हरिश श्रीवास्तव इस प्रदर्शनी में उपस्थित हुए हैं पर्वत को अलग रंगों में, बिल्कुल अलग रंगों में प्रस्तुत किए हैं रंगों का उतार चढ़ाव सौंदर्य के बिल्कुल ही करीब लाकर खड़ा कर देता है कृति को। कमलकांत के धोलपुर पिंक स्टोन द्वारा निर्मित कृति में रविवारीय आनंद के साथ को जिया जा सकता है। शीर्षक नागकन्या के माध्यम से कलाकार राजेश श्रीवास्तव रंगो और आकृतियां के साथ खेलते हुए से दिखे हैं, बहुत ही सुंदर रंग आंखों को सुकून देने वाले भावों के साथ सुंदर बन पड़े हैं। पूरे चित्र में बैकग्राउंड या बेस को इतनी बारीकी से गढ़ा गया है कि एकबारगी तो कपड़े का भ्रम उत्पन्न हो जाता है जो इनकी खूबी है। सतीश शर्मा, शोविन भट्टाचार्य, अरविंद सिंह, श्रीनिवास चौधरी के कृतियों में कहीं शांति है तो कहीं शांति की मांग है, कहीं जल का महत्व दर्शित है तो कहीं कंटीले भाव से परेशान दुनिया का दुख है, बेचैनी है। श्याम बिहारी अग्रवाल के यहां दैनिक जीवन का संघर्ष है। सुरेश नायर के छोटे-छोटे समूहों से बड़े की विवेचना है। स्वाति, साबले, भुवनेश्वर भास्कर, प्रमोद प्रकाश के कृतियों में जीवन है, जीवन की दैनिक चर्या है, जूझते विचार और लोग हैं जबकि विवेक दास के कृतियों में मिरर इचिंग के माध्यम से प्रकृति सा ही कुछ है। सुमित ठाकुर आस्था के राह को उजागर करते हैं तो सुलेमान अपने चिर-परिचित अंदाज के साथ हैं। दीर्घा में लोक कला का एक अलग कोना भी है जहां अभिराम दास, अरुंधती महतो, ग्रिश्मा शाह, मानिक चंद महतो, नरेंद्र पंजियारा, सहजन चित्रकार, संध्या शुक्ला, संजय बालकृष्ना, विनीता भास्कर की कृतियां प्रदर्शित हुई है। जहां पिडिया माई, भगवान विष्णु का मत्स्यावतार, हनुमान जैसी कृतियां हैं तो वहीं डिवाइन, कर्मा जैसे चित्र भी हैं।

विमला आर्ट फोरम की तरफ से आयोजित वार्षिक प्रदर्शनी में प्रदर्शित सभी कृतियों को लेकर फाउंडर, ट्रस्टी कंचन मेहरा जी की बात, उनकी खुशी इसमें जग जाहिर है। टैलेंटेड आर्टिस्ट को लेकर, कलाकारों को लेकर उनके विचार उनके कृतियों की बाबत ही संजीदा है जबकि कलाकार दिलीप शर्मा (प्रेसिडेंट, कन्वीनर विमला आर्ट फोरम) जो एक माध्यम बने हैं, जो कृतियों को इतना बढ़िया प्लेटफार्म दिलाने में सफल हुए हैं तो साथ ही सभी आमंत्रित कलाकारों को एक साथ जोड़ने का, एक साथ लाने का भी कारण बने हैं। इतने कृतियों के संगम का सारा श्रेय उनको ही जाता है। संजीव मेहरा चेयरपर्सन विमला आर्ट फोरम के विचार भी प्रदर्शनी को लेकर बड़े ही सुंदर है। प्रदर्शनी में पिंक आयरन दीर्घा पर जल्द ही चर्चा होगी।

पर्यटन

कारुलाल जमडा 'कारुण्य'

लेखक ने माही नदी को उद्गम से सागर संगम तक देखा है।

माहेय प्रदेश- प्रकृति, धर्म एवं इतिहास का अद्भुत संगम

मध्यप्रदेश के पश्चिम में दक्षिणी राजस्थान से जुड़ा क्षेत्र अपने भीतर प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही ऐतिहासिक मंदिरो और स्मारकों की एक वृहद श्रृंखला समेटे हुए है। रतलाम जिला स्वयं अपने आप में प्रकृति के अद्भुत सौंदर्य से भरा हुआ है। कुछ साल पहले जिले में बतौर पुलिस अधीक्षक पदस्थ रहे चर्चित आईपीएस अधिकारी श्री गौरव तिवारी जिले के सौन्दर्य पर मंत्र मुग्ध हो गए थे। उन्होंने अपनी फोटोग्राफी और ब्लागिंग के माध्यम से इसको प्रकट किया। उन्होंने यहां केम्पिग की, ट्रेकिंग के स्थल खोजें और पश्चिमी छोर पर बिखरे विपुल प्राकृतिक सौंदर्य को उद्घाटित किया। उनके अनुसार रतलाम जिले का सैलाना और बाजना क्षेत्र किसी भी मामले में प्रदेश के अन्य हिस्सों से कम नहीं है। अरावली की अन्तिम उत्यपत्यिकाओं और विंध्य के दक्षिण छोर का सन्धि स्थल होने के कारण यह क्षेत्र प्रकृति, वन्य जीवन और आदिम जनजाति संस्कृति की त्रिवेणी का मिश्रित स्वरुप प्रकट करता है। झाबुआ-रतलाम की सीमा बनाती मही नदी इस जिले के वन प्रान्तर से होकर बहती है। यहां नाहरगढ़ गांव के समीप नदी के भीतर की ओर ही एक लम्बी प्राकृतिक नृसिंह गुफा है और आस-पास परमारकालीन शिवमन्दिर यत्र-तत्र दिखाई देते हैं। माहेय प्रदेश का आरम्भ यहीं से माना गया है।

धार के मिंडा गांव से निकलकर बहने वाली मही उर्फ माही नदी इसकी जीवन रेखा है। रतलाम-झाबुआ की सीमा बनाती हुई मही आगे राजस्थान के बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले में बहती हुई गुजरात में प्रवेश करती है और समुद्र में मिलती है। यही वह नदी है जो कर्क रेखा को दो बार काटती है और 'यू' आकृति बनाती है। इसी यू आकृति से घिरी दो सौ किलोमीटर की परिधि में अनेक परमारकालीन शिवालय बनें है जिनका स्थापत्य और शिल्प बेजोड़ है। दसवीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के बीच में परमार वंश के शासन के दौरान मही नदी के उद्गम से लेकर के उसके समुद्र संगम 'महीसागर' तक कई जगह हर 500 अथवा 1000 मीटर के बीच में तत्कालीन शासको ने नदी के किनारे पर ही शिवालयों की स्थापना की जिसमें रतलाम के समीप उच्चानगढ़ माताजी स्थान के पास के किनारे कुछ समय पूर्व खुदाई कर निकाला गया शिवालय क्षेत्र और उसके पश्चात क्रमशः बेणेश्वर का शिव मंदिर और अरथुना के मंदिर मुख्य हैं।अरथुना तो लम्बे समय तक परमार वंश की राजधानी भी रहा।माही नदी के आसपास का संपूर्ण क्षेत्र 'माहेय' कहलाता है। ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार 'गुप्त काल में बौद्ध भिक्षुओं का फेरा संपूर्ण माहेय प्रदेश तक था' अर्थात उस समय मही के किनारे-किनारे राजस्थान-मध्य प्रदेश- गुजरात के कछार में बौद्ध भिक्षुओं का आगमन देखा गया था। ऐसी स्थिति में इसके निकट के पहाड़ों में बौद्ध विहार एवं स्तूपों के दबे होने की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता।

रतलाम का सैलाना क्षेत्र जो कि इतिहास के साथ प्राकृतिक दृष्टि से भी बहुत समृद्ध है,वहां से दक्षिण-पश्चिम की ओर फैली पर्वत श्रृंखला में कुछ स्थान ऐसे हैं जो की रतलाम के साथ निकटवर्ती प्रदेश के ग्रामीण पर्यटन को पंख लगा सकते हैं। सैलाना से 20 से किलोमीटर 25 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में उतरते ही चार प्रमुख नैसर्गिक सौन्दर्ययुक्त क्षेत्र आपकी प्रतीक्षा करते हुए नजर आते हैं।इनमें से प्रमुख है समीपवर्ती केदारेश्वर महादेव और पश्चिम में स्थित परमारकालीन देवझर महादेव मंदिर जो की राजस्थान की सीमा पर अवस्थित है।यहां का सौंदर्य इतना आकर्षक है कि बरसात में यहां तीन से चार छोटे जलप्रपात अपने संपूर्ण यौवन पर होते हैं। देवझर से निकला झरना और उसका पानी पहाड़ों की निचली तलहटी में बसे छोटी नाल, बड़ी नाल और रणखेत जैसे बहुत ही निचले भूभाग परंतु बेहद दर्शनीय घाटियों से होकर बहता है और आगे जाकर यह बुदन नदी के माध्यम से मही का हिस्सा बनता है। इसके ठीक पास प्रतापगढ़ जिले के ऋषि महादेव मंदिर, कमलेश्वर और गोतमेश्वर महादेव मंदिर को शामिल किया जा सकता है। यह कांठल क्षेत्र का भाग है जिसमें मही द्वारा निर्मित विशाल छप्पन का मैदान है।मालवा के पठार का अंत इन्हीं घाटियों में होता है।

सैलाना के ही समीपस्थ नैसर्गिक सौन्दर्य से आच्छादित शिवगढ़ नामक स्थान पर रहने वाले श्री महावीर सिंह राठौर ने इन्ही हरितिमा के मध्य राजस्थानी और मालवी की धरण-धारण संस्कृति को संजोए एक बेहतरीन कृष्ण जंगल रिसोर्ट विकसित किया है। वे कहते हैं यह बेहद सुंदर प्राकृतिक क्षेत्र अपने भीतर इतिहास, वन्य जीवन, पुरातत्व के कई अद्भुत रहस्य समेटे हैं और आगामी समय में पर्यटन की अपार संभावनाओं को प्रकट करता है। यदि रतलाम, बांसवाडा और प्रतापगढ़ जिले की एक साझा पर्यटन नीति तैयार होती है तो उसमें बांसवाड़ा की मही-बजाज सागर परियोजना, गैमन पुल, प्रसिद्ध आईलैंड चचाकोटा के साथ, झुआ जलप्रपात को भी शामिल किया जा सकता है।यहां से बांसवाड़ा बमुश्किल पचास-साठ किलोमीटर और बेणेश्वर सहित उसके सभी तीर्थस्थल सौ मीटर के दायरे में ही हैं। त्रिपुरा सुंदरी,अरथुना के परमारकालीन शिव मंदिर इस नैसर्गिक सौन्दर्य को और भी द्विगुणित करते हैं। उनके समीप आनन्दपुरी धाम में मही की विशालता आदिवासी योद्धा गोविंद गुरु का गुणगान करती दिखती है। रतलाम जिले से डूंगरपुर और गुजरात के महीसागर तक मही नदी का सम्पूर्ण प्रवाह क्षेत्र ही 'माहेय प्रदेश' कहलाता है।मही के आसपास के टीलो को अगर खोदा जाए तो परमारकालीन शिवालय ही नही अपितु गुप्तकालीन और उससे भी प्राचीनतम स्मारकों को खोजा जा सकता है। माहेय प्रदेश 'वागड़ की गंगा' कहीं जाने वाली मही की महानता का विस्तृत दस्तावेज है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं ।

कौशलजी वर्सेस कौशल- दर्शकों का ध्यान खींचने में सफल

जियो हॉटस्टार पर पिछले सप्ताह रिलीज हुई एक लुभावनी और मनोरंजक फिल्म -' कौशलजी वर्सेज कौशल' बड़ी संख्या में दर्शकों का ध्यान खींच रही है । निर्देशक सीमा देसाई की इस फिल्म की कहानी एक ऐसे भारतीय परिवार के जीवन के तौर-तरीकों को लेकर बुनी गई है जो भारी उतार -चढ़ाव के बीच उच्चतम जीवनमूल्यों की तलाश में लगा है ।यह परिवार भी एक आम परिवार की तरह हैं। जहाँ माता-पिता की आपसी लड़ाईयों और बच्चों का धीरे-धीरे उनसे दूर होते चले जाने को दिखाया गया है । फिल्म की कहानी की खासियत यह है कि यह फिल्म उन माता-पिता की दुविधा को दिखाती है, जो अपने सपनों को पीछे छोड़ बच्चों की ख्वाहिशों को पूरा करने में लग जाते हैं. लेकिन जब बात बच्चों के समझने की आती है तो वह ऐसा करने में नाकामयाब साबित होते हैं, जिसके चलते रिश्ते टूटने की ओर बढ़ते चले जाते हैं ।निर्देशक सीमा देसाई की यह फ़िल्म सरसरी तौर पर तो ओटीटी पर सीधे रिलीज होने वाली एक औसत फिल्म सी ही लगेगी, लेकिन फिल्म की अंतर्धारा इसे दूसरी फिल्मों से अलग करती है। इस फिल्म का अंडर करंट ऋषिकेश मुखर्जी जैसी फिल्मों का है। सीमा का अनुभव अभी उतना मजबूत नहीं है कि वह अपने विचार को परदे पर बिना प्रवचन की शक्ल दिए साधारण तरीके से सिनेमा में बुन सकें लेकिन उनकी नीयत और उनकी कोशिश, दोनों काबिले तारीफ हैं।

फिल्म की कहानी कन्नौज शहर के साहिल की है जो कव्वाली के प्रति गहरे मगर अधूरे जुनून के साथ एक अकाउंटेंट है और उनकी पत्नी संगीता की भी जो एक हाउसवाइफ हैं. लेकिन एक परफ्यूमर बनने की ख्वाहिश रखती है । कहानी साहिल की भूमिका निभा रहे आशुतोष राणा और संगीता की भूमिका निभा रही शीबा चड्ढा के आसपास बुनी गई है । इनका एक बेटा भी है युग जो नोएडा में एक विज्ञापन कम्पनी में काम करता है , जबकि बेटी रीता घर से दूर एक एनजीओ में काम करती है । माता-पिता और बच्चों के बीच दूरी और सपनों को पूरा ना कर पाने की एक तड़प साहिल और संगीता में दिखती है, जिसके चलते दोनों के बीच आम कपल की तरह लड़ाईयां होती है. हालांकि जब युग होली के त्योहार पर घर आता है तो उसका बर्ताव माता पिता को तलाक का फैसला लेने पर मजबूर कर देता है ।जिससे बच्चे सदमे में आ जाते है । फिर कहानी में एक नया मोड़ आता है, जब युग को प्यार हो जाता है और वह अपने परिवार को एक हँसता खेलता परिवार दिखाने की कोशिश करता है ।

इस फिल्म में कई उत्कृष्ट कलाकारों का शानदार प्रदर्शन देखने को मिलता है, जिसमें आशुतोष राणा और शीबा चड्ढा माता-पिता की भूमिका में आम परिवार की कहानी को बड़े प्रभावी और रोचक अन्दाज़ में बयां करते हैं । फिल्म 'छावा' में जूनियर आर्टिस्ट की रखे गये आशुतोष राणा इस फिल्म की भूमिका से ज़रुर प्रसन्न होंगे । उनका इत्रशाला में बाबूगिरी करना और मौका मिलने पर कव्वाल होने के सपने कोबुनने का अभिनय उन्होंने पूरी शिद्दत और संवेदनशीलता के साथ निभाया है और उनका रुआब भी इस फिल्म में अच्छे से खिला है। ईशा तलवार भी इस फिल्म में संगीता की भूमिका में काफी प्रभावित करती हैं।भारतीय सौंदर्य के सारे प्रतिमान पर वे खरी उतरतीं हैं जिनकी तरफ हिन्दी सिनेमा के फिल्मकारों का ध्यान जाना चाहिए ।

फिल्म में उनके बेटे युग की भूमिका निभाने वाले पवैल गुलाटी अपने माता-पिता के रिश्ते की टूटी डोर को जोड़ने की कोशिश में फंसे हुए हैं. जबकि, ईशा तलवार, दीक्षा जोशी (युग की बहन रीटा), ग्रुशा कपूर, और ब्रिजेंद्र काला फिल्म को आखिर तक जोड़े रखने के लिए मजबूर कर देंगे ।

फिल्म की निर्देशक सीमा देसाई की असल जीत इसी में हैं कि वे अपनी पहली ही फीचर फिल्म में व हिन्दी सिनेमा की वह लीक पकड़ने में सफल रही है, जिस पर चलकर हिन्दी सिनेमा यहाँ तक आ पाया है। और, ये लीक है अपने आसपास के समाज की ग्रंथियों को कैमरे के जरिये धीरे धीरे खोलना और फिर उनकी सुलझन को करीने से दर्शकों के सामने यूं परोसना कि कहीं न कहीं, कुछ न कुछ उसे घर तक पहुंचते तक कुरेदता रह जाए।फिल्म का गीत-संगीत और सम्पादन इसकी कमजोर कड़ी है। फिल्म चूंकि ओटीटी पर है लिहाजा नब्बे मिनट की अवधि इसके लिए बिल्कुल फिट होती। फिर भी पारिवारिक मनोरंजन की तलाश में रहने वालों के लिए ये एक बेहतर विकल्प हो सकती है।

बकतरा की घटना शर्मशार करनें वाली - दोहरे

बहुजन समाज पार्टी की मांग, दोषियों पर हो कड़ी कार्रवाई

सीहोर (नप्र)। बकतरा की घटना को लेकर बहुजन समाज पार्टी सीहोर ने शनिवार को कलेक्टर बाला गुरु के को ज्ञापन सौंपा। बसपा के कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट परिसर में जाकर जिला कलेक्टर को ज्ञापन दिया गया।

ज्ञापन में मांग की गई की बकतरा की घटना बड़ी गंभीर है। घटना के आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। बसपा के कमलेश दोहरे ने बताया कि आजादी के 75 साल बाद भी देश प्रदेश में और खासकर केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के लोकसभा क्षेत्र में ऐसी घटना को अंजाम दिया जाना बेहद शर्म नाक है। ऐसे लोगों पर कड़ी कार्रवाई जिला प्रशासन करें और पीड़ितों को न्याय दिलाये। इस मौके पर प्रमुख रूप से अनोखी लाल मालवीय जिला प्रभारी, एन पी सागर जिला प्रभारी, संजीव बौद्ध जिला अध्यक्ष, धर्मेंद्र वंशकार पूर्व जिला प्रभारी नर्मदा पुरम, मुकेश गौर पूर्व जिला प्रभारी भोपाल, देवकरण कुरल विधानसभा अध्यक्ष आष्टा, अर्जुन पैरवाल आष्टा विधानसभा उपाध्यक्ष आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

बैतूल जिले के 44 परीक्षा केंद्रों पर हुआ कक्षा 10वीं का एनएसक्यूएफ विषय का प्रश्न पत्र

बैतूल। हाई स्कूल कक्षा 10वीं का एनएसक्यूएफ विषय संबंधी प्रश्न पत्र जिले में 44 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि एनएसक्यूएफ अंतर्गत आईटी ट्रेड के प्रश्न पत्र में 1039 परीक्षार्थियों में से 1031 उपस्थित रहे, 08 परीक्षार्थी परीक्षा में अनुपस्थित थे। इसके अलावा सिक्योरिटी ट्रेड में 65 दर्ज में से 65 विद्यार्थी शामिल हुए। रिटेल ट्रेड में 62 में से 62 छात्र सम्मिलित, बैंकिंग ट्रेड में 43 में से 43 सम्मिलित और फिजिकल एजुकेशन ट्रेड में 33 में से 33 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। इसी तरह ब्यूटी एंड वैलनेस ट्रेड में 620 में से 17 परीक्षार्थी अनुपस्थित 603 उपस्थित रहे, अपेरल ट्रेड में 03 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे, 247 परीक्षा में सम्मिलित हुए। एग्रीकल्चर ट्रेड में 244 में से 240 उपस्थित एवं 04 अनुपस्थित रहे। प्लंबिंग ट्रेड में 58 में से 02 अनुपस्थित एवं 56 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। इन सभी ट्रेड में कुल मिलाकर 2414 परीक्षार्थी को सम्मिलित होना था, जिसमें से 34 विद्यार्थियों के अनुपस्थित रहने से 2380 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। जिला एवं विकासखंड स्तर के विभिन्न उडन् दस्तों द्वारा इस दौरान 16 केंद्रों औचक निरीक्षण किया गया। नकल संबंधी कोई प्रकरण दर्ज नहीं हुआ।

कक्षा दसवीं के अंग्रेजी विषय का प्रश्न पत्र 3 मार्च को

3 मार्च 2025 को हाई स्कूल प्रमाण पत्र परीक्षा कक्षा 10वीं अंतर्गत अंग्रेजी विषय का प्रश्न पत्र होना है। माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा संपूर्ण परीक्षा पर निगरानी रखे जाने की दृष्टि से मोबाइल एप विकसित किया गया है, जिसके माध्यम से विभिन्न स्तरों से रिपोर्टिंग एवं निगरानी की कार्यवाही संपादित की जा रही है। परीक्षार्थियों एवं उनके अभिभावकों को परीक्षा समय का विशेष ध्यान रखे जाने की हिदायत दी गई है। नकल की प्रवृत्ति पर रोक लगाने की दृष्टि से परीक्षार्थी को परीक्षा केंद्र पर प्रात- 8 बजे पहुंचने के लिए निर्देशित किया गया है, यह निर्देश उनके प्रवेश पत्र पर भी अंकित है। केंद्र पर तलाशी, अनुक्रमांक अनुसार कक्ष आवंटन संबंधी कार्य इत्यादि के बाद 8.30 बजे परीक्षार्थी को कक्ष में प्रवेश दिया जाना होता है। अभिभावकों एवं परीक्षार्थियों से निर्देशों का कड़ाई से पालन किए जाने की अपेक्षा की गई है।

ताप्ती घाट के साइड शोल्डर पर शुरू हुआ सुधार कार्य

ताप्ती घाट चौड़ीकरण पर विधायक हेमंत खंडेलवाल ने मंत्री से की थी चर्चा

बैतूल। बैतूल-आठनेर रोड का ताप्ती घाट इन दिनों लगातार दुर्घटनाओं का केंद्र बनता जा रहा है। घाट पर सडक़ के दोनों किनारों के साइड सोल्डर में गड्ढे पडने से वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। सडक़ किनारे गड्ढों की वजह से वाहन चालक साइड नहीं ले पा रहे थे, जिससे कई बार हादसे होते रहे। इस समस्या को लेकर आठनेर के भाजपा नेता लंबे समय

से घाट कटिंग की मांग कर रहे थे, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई थी। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने हाल ही में आठनेर दौरे के दौरान ताप्ती घाट की वास्तविक स्थिति को देखा और तुरंत विभागीय अधिकारियों को बुलाकर सडक़ किनारे गड्ढों को भरने के निर्देश दिए। उन्होंने तत्काल प्रभाव से साइड शोल्डर पर मुरम डलवाने का आदेश दिया ताकि वाहन चालकों को राहत मिल सके। विधायक के सख्त रुख के बाद विभाग ने शनिवार से ताप्ती घाट पर साइड सोल्डर डालने का काम शुरू कर दिया, जिससे अब वहां से गुजरने वाले वाहनों को काफी सहूलियत मिलेगी। सूत्रों के मुताबिक, विधायक हेमंत खंडेलवाल ने ताप्ती घाट के चौड़ीकरण को लेकर विभागीय मंत्री से भी चर्चा की है। उन्होंने घाट पर हो रही दुर्घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए चौड़ीकरण कार्य को जल्द शुरू करने की मांग की है। यदि घाट चौड़ा हो जाता है, तो हादसों में काफी हद तक कमी आ सकती है।

बदलते मौसम का लोगों की सेहत पर पड़ रहा असर, वायरल, सर्दी-खांसी के बढ़ रहे मरीज

बच्चे कफ वाली खांसी, सर्दी, निमोनिया और डायरिया के हो रहें शिकार

बैतूल। जिले का मौसम हर चार से पांच दिन बाद बदल रहा है। कभी तेज गर्मी तो कभी सुबह रात में ठंड है। इसका असर सबसे ज्यादा बच्चों पर पड़ रहा है। बार-बार मौसम के बदलने के कारण बच्चों में सर्दी-खांसी और बुखार आ रहा है। ध्यान नहीं देने पर निमोनिया में बदल रहा है। बच्चों की श्वास नली सिकुड़ने से कफ जम रहा है। इससे निमोनिया के मरीज बढ़े हैं। जिला अस्पताल में डॉक्टर्स को दिखाने आ रहे मरीजों में 65 प्रतिशत से अधिक मरीज सर्दी, खांसी और बुखार के हैं। वहीं प्राइवेट डॉक्टरों के क्लीनिक पर भी बच्चों की भीड़ नजर आ रही है। जिला अस्पताल के सिविल सर्जन एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जगदीश घोरे ने बताया बार-बार मौसम में बदलाव के कारण वर्तमान समय में बच्चों में कफ वाली खांसी के केस बढ़ रहे हैं। बच्चों में वायरल

निमोनिया हो रहा है। छोटे बच्चों में श्वसन संबंधी बीमारी का एक प्रमुख कारण है। यह एक संक्रामक रोग भी है, जो एक से दूसरे में फैलता है। शुरुआत में हल्की सर्दी- खांसी होती है, ध्यान नहीं देने पर ने वायरल निमोनिया हो जाता है। ऐसे में बच्चों को भर्ती भी करना पड़ रहा है। इस तरह बच्चों 5 को ठीक होने में 8 से 10 दिन तक लग रहे हैं।

सलाह - बीमार व्यक्तियों से बच्चों को दूर रखें - जिला अस्पताल के सिविल सर्जन एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जगदीश घोरे ने बताया कि बार-बार मौसम के बदलने से वायरल के केस बढ़े है। ऐसे में छोटे बच्चों को सुबह और शाम के बाद बाहर निकालते समय सावधानी रखें, उन्हें कपड़ों से ढंककर रखें, शादी-पार्टी के खाने से बचाएं, किसी बड़े व्यक्ति को सर्दी- खांसी है तो उससे दूर रखें, साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। सर्दी, खांसी, जुकाम होने पर तुरंत डॉक्टर की सलाह लें। श्री घोरे ने बताया कि मौसम में बार-बार आ रहे बदलाव के कारण बच्चों में डायरिया और उल्टी के मामले बढ़े हैं। डायरिया से पीड़ित बच्चों को ठीक होने में 3 से 4 दिन लग रहे हैं। गर्मी के कारण परिजन बच्चों में खानपान का विशेष ध्यान रखें। थोड़ी सी लापरवाही के चलते बच्चे डायरिया और उल्टी की शिकायत देखने को मिल रही है। पानी हमेशा उबालकर ठंडा कर ही बच्चों को पिलाएं और ओआरएस घोल का भी दिन में चार-पांच बार उपयोग करें।

ओपीडी में आने वाले मरीजों में 10 प्रतिशत बच्चे

जिला अस्पताल की ओपीडी में आम दिनों में 55-60 बच्चे आते हैं, लेकिन मौसम के बदलने से बच्चों की ओपीडी 100 के लगभग पहुंच गई है। इनमें अधिकांश बच्चे सर्दी, खांसी और बुखार के हैं। ध्यान नहीं देने पर श्वास नली के सिकुड़ने से बच्चों में निमोनिया के केस बढ़ रहे हैं। जिला अस्पताल में ही प्रतिदिन बच्चों को भर्ती भी किया जा रहा है। संक्रामक रोग होने से बच्चे इसकी चपेट में तेजी से आ रहे हैं। हालात यह है कि जिला अस्पताल की ओपीडी पिछले दो दिनों से बढक़र 650 मरीजों पर पहुंच गई है। वहीं इससे पहले 500 के आसपास थी। सामान्य दिनों में ओपीडी 400 के आसपास रहती है। बडे मरीजों में सर्दी, कफ वाली खांसी और बुखार आ रहा है। उनके गले में दर्द हो रहा है।

इनका कहना है

मौसम कभी गर्म, तो कभी ठंडा होने से इसका असर बच्चों पर पड़ रहा है। ऐसे मौसम में बच्चों की सेहत पर विशेष ध्यान देना चाहिए। बच्चों को भीड़ वाली जगह कम लेकर जाये और उबालकर पानी पिलाये। बुखार, सर्दी, खांसी होने पर तुरंत डॉक्टर से सलाह ले।

-डॉ. जगदीश घोरे, सिविल सर्जन एवं शिशु रोग विशेषज्ञ, जिला चिकित्सालय बैतूल

वित्तीय साक्षरता शिविर में महिलाओं को दी जानकारी

बैतूल। वित्तीय साक्षरता सप्ताह के अंतर्गत सेंट्रल बैंक आर.से.टी. भारतभारती बैतूल में एनआरएलएम के सहयोग से वित्तीय साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में वित्तीय समझदारी समृद्ध नारी पर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को जानकारी दी गई। शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक के एलडीओ सौम्यदीप चटर्जी एवं डीडीएम नाबार्ड राहुल कुशवाह, अग्रणी जिला प्रबंधक, ए.के. सिंह, आर.से.टी. निर्देशक मंजूषा आठोले उपस्थित हुए। वित्तीय साक्षरता सलाहकार

संजय गढ़ेकर ने शिविर में शामिल हुई महिलाओं को वित्तीय साक्षरता सलाहकार द्वारा मोबाइल बैंकिंग जैसे राशि अंतरित करना, यूपीआई का उपयोग करना, किसी को ओटीपी नहीं देना, कोई फोन पर डराया धमकाया जाता है तो तुरंत पास के पुलिस थाने में शिकायत कराए, समय पर ऋण की किश्त चुकाएं, ताकि बैंक एवं अन्य संस्थाओं में अपना क्रेडिट खराब नहीं हो सके। सायबर सेल में शिकायत दर्ज करने के लिए हेल्पलाइन नम्बर 1930 एवं शासकीय योजनाओं की जानकारी दी गई। सामाजिक सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, बचत करने के बारे में बताया। आर.से.टी. निदेशक द्वारा ग्रामीण स्वरोजगार विकास संस्थान में प्रशिक्षण की जानकारी विस्तृत में दी गई। शिविर के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक के एलडीओ सौम्यदीप चटर्जी द्वारा शिविर में उपस्थित महिलाओं को संबोधित किया गया। अग्रणी जिला प्रबंधक द्वारा शिविर में महिलाओं को बैंकिंग परिचालन में रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तृत में जानकारी दी गई।

सोहागपुर पुलिस ने हत्या के प्रयास में फरार आरोपी को किया गिरफ्तार

सुबह सवेरे सोहागपुर

सोहागपुर पुलिस ने हत्या के प्रयास में फरार आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। पुलिस अधीक्षक श्री गुरकरन सिंह के मार्गदर्शन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अशुतोष मिश्र, एसडीओपी सोहागपुर श्री संजू चौहान के निर्देशन में पुलिस ने हत्या का प्रयास का अपराध घटित करने वाले फरार आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है।नगर निरीक्षक कंचन सिंह ने बताया कि दिनांक 24 नवम्बर 24 को फरियादी सदाशिव पिता छोटेलाल ठाकुर उम्र 50 साल निवासी ग्राम बढैयाखेडी ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी।कि मैं अपने बेटे राजीव और रामजी के साथ भांजे के खेत ग्राम भट्ठी में धान काटने गये थे। उसी समय ग्राम भट्ठी के नंदू उर्फ चंद्रमोहन, राहुल पुर्विया, शुभम पुर्विया ने अपने अन्य साथियो के साथ आकर जान से मारने की नीयत से राड और लठो से मेरे और मेरे लडके रामजी और राजीव के साथ मारपीट कर मेरी स्कोर्पियो गाड़ी को तोड़फोड़ कर क्षतिग्रस्त कर दिया। फरियादी की रिपोर्ट पर पुलिस ने अपराध क्रं. 691/24 धारा 109,296,115(2),324(4), 3(5) बीएनएस. का पंजीबध्द कर विवेचना में लिया था। प्रकरण में दिनांक 28 नवंबर 24 को आरोपी नंदू उर्फ चंद्रमोहन पिता मंगल सिंह

पुर्विया उम्र 30 साल, शुभम पिता भूरा उर्फ अर्जुन सिंह पुर्विया उम्र 23 साल, एवं आरोपी राहुल पिता विशाल सिंह पुर्विया उम्र 24 साल को गिरफ्तार कर लिया था।घटना का मुख्य आरोपी विशाल उर्फ चुन्ना पुर्विया घटना दिनांक से ही फरार चल रहा था। आरोपी के काफी समय से कुंभ मेले में होनी की सूचना प्राप्त हुई थी। आरोपी के गिरफ्तारी के प्रयास पर आज मुखबीर से प्राप्त सूचना पर ग्राम भट्ठी में आरोपी के निर्माणाधीन मकान की घेराबंदी कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया । आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश कर न्यायालय के आदेश से जेल में दाखिल किया गया ।

मुख्य भूमिका - थाना प्रभारी सोहागपुर कंचन सिंह, उपनिरीक्षक मेघा उदेनिया, आरक्षक दीपेश बौरासी, आरक्षक रोहित गौर, आरक्षक अंकुश कौरव की मुख्य भूमिका रही ।

जन अभियान परिषद जन-जन का अभियान बन रही है : केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उइके

स्वैच्छिक संगठनों की कार्यशाला भारत भारती में

बैतूल। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की समृद्धि योजनान्तर्गत स्वैच्छिक संगठनों की एक दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ भारत भारती संस्थान के सभागृह में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि केंद्रीय जनजाति राज्य मंत्री दुर्गादास उइके, मप्र जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष (राज्य मंत्री दर्जा) मोहन नागर ने भारत माता के चित्र समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष मोहन नागर ने केन्द्रीय मंत्री का स्वागत किया। इस अवसर पर परिषद के टास्क मैनेजर सैयद शाकिर अली जाफरी, सीए एवं वरिष्ठ समाजसेवी सुनील हिराणी उपस्थित थे।

अपने उद्बोधन में केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उइके ने कहा कि समाज कार्य मे स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के माध्यम से मध्यप्रदेश में एनजीओ बड़ी संख्या में सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन कर सेतु का कार्य कर रहे है। शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे इसका प्रयास कर रहे हैं। आज जन अभियान परिषद अपने कार्यों से जन-जन का अभियान बन गई है। परिषद के उपाध्यक्ष श्री नागर ने कहा कि एनजीओ के माध्यम से समाज की उन्नति के दो मॉडल चल रहे हैं। उसमें एक मॉडल पाश्चात्य मॉडल

है जो अनुबन्ध आधारित विकास के आधार पर कार्य करता है। योजना के पूर्ण होने पर वे समाज से नाता तोड़ देते हैं। किन्तु हमारा भारतीय मॉडल सम्बन्धों पर आधारित विकास है, जो योजना पूर्ण होने के बाद भी समाज से सम्पर्क बनाकर रखते हैं व इनके सुख दुःख में सहभागी बनते हैं। मध्यप्रदेश इसी भारतीय मॉडल के आधार पर कार्य करने वाला संगठन है। स्वयंसेवी संगठनों की संरचना और प्रबंधन एनजीओ रजिस्ट्रेशन 1973 धारा 27 व 28, 80 जी, 12 ए के अलावा वार्षिक प्रतिवेदन साधारण सभा की बैठक, प्रबंधन कार्यकारिणी बैठक एवं अन्य दस्तावेजीकरण, सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के बारे में चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं वरिष्ठ समाजसेवी सुनील हिरानी एवं नमन सेवा समिति से शिशिर चौधरी द्वारा स्वैच्छिक संगठनों की संरचना एवं प्रबंधन विषय पर विस्तृत जानकारी दी।

संभाग समन्वयक नर्मदापुरम कौशलेश तिवारी ने सामाजिक अंकेक्षण एवं उसके प्रभाव आकलन पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला की रूपरेखा जिला समन्वयक प्रिया चौधरी ने प्रस्तुत की व सत्र का संचालन अरविन्द माथनकर ने किया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षण में विकासखण्ड समन्वयक जयप्रकाशी परते, राधा बरोदे, मधु चौहान, संतोष सिंह राजपूत, विकास कुमरे, लेखापाल रूपेश भूमरकर, डाटा एंट्री ऑपरेटर दिनेश पंवार एवं बैतूल जिले के 80 स्वैच्छिक संगठन सहभागिता कर रहे हैं। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

जिले के संविदा महासंघ ने नवीन मानव संसाधन मैनुअल का किया विरोध

नवीन मानव संसाधन मैनुअल-2025 को वापस नहीं लेने पर दी आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मध्यप्रदेश द्वारा 27 फरवरी 2025 को नवीन मानव संसाधन मैनुअल जारी किया गया है। जिसे लेकर बैतूल जिले सहित प्रदेश भर में कार्यरत संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों में भारी आक्रोश है। भारतीय मजदूर संघ विभाग प्रमुख विनय डोंगरे ने बताया कि भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में 22 जुलाई 2023 को आयोजित संविदा महापंचायत में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा की गई घोषणाओं को नवीन मानव संसाधन मैनुअल 2025 में अमलीजामा पहनाये जाने की जगह कई तरह की कटोतियां की गयी है। जिसे लेकर अब पूरे प्रदेश में विरोध के स्वर उठ रहे है। संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष डॉ.साहू ने सरकार से मांग की है कि नवीन मानव संसाधन मेनुअल को तत्काल वापस लिया जाए एवं पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा संविदा महापंचायत में की गयी घोषणाओं को पूरा किया जाए, जिससे संविदा स्वास्थ्य कर्मचारियों के साथ न्याय हो सके। अगर मध्यप्रदेश सरकार द्वारा नवीन नीति को वापस नहीं लिया जाता है तो संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी आंदोलन के लिये बाध्य होंगे, जिससे प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाए चरमरा सकती है जिसकी समस्त जिम्मेदारी मध्यप्रदेश सरकार की होगी।

नाम परिवर्तन सूचना

मेरे पासपोर्ट में मेरा नाम Devanshi दर्ज है जोकि अब मेरे द्वारा मेरे सरनेम के साथ Devanshi Samaiya कर लिया गया है, जो मेरे सभी डाक्यूमेंट्स में दर्ज है । भविष्य में मुझे नये नाम Devanshi Samaiya से ही जाना पहचाना जावे।

पता:- D/o - Dr. Atul Samaiya 59, Dreams Glory, Near Gujrati Colony, Bawadiya Kalan, Bhopal, PIN-462039

कार्यालय नगर पालिका परिषद बैतूल (मप्र.)

क्र./लो.नि.शा./ई./814 से 817 बैतूल दिनांक 19/02/2025

// ई-टेन्डर आमंत्रण सूचना //

(प्रथम निविदा आमंत्रण सूचना)

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptenders.gov.in/nicgep/app पर देखा जा सकता है।

क्र.	ऑनलाईन निविदा क्र.	कार्य/ सामग्री का विवरण	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2025_UAD_403503_1	Material supply of Municipal Council Betul GROUP 001	1- 365 Days 2- 2500000/-	1- 5000/- 2-50000/-	24/03/2025
2	2025_UAD_403504_1	Providing laying, fixing of hume pipe (Differend size) and half round RCC pipe At Different location in Municipal Council Betul GROUP 002	1- 365 Days 2- 2500000/-	1- 5000/- 2-50000/-	24/03/2025
3	2025_UAD_403505_1	Material supply of Municipal Council Betul GROUP 003	1- 365 Days 2- 2500000/-	1- 5000/- 2-50000/-	24/03/2025
4	2025_UAD_403506_1	Supply of Electrical Material Municipal Council Betul	1- 365 Days 2- 2500000/-	1- 5000/- 2-50000/-	24/03/2025

नोट- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन https://mptenders.gov.in/nicgep/app की वेबसाईड पर ही किया जावेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद बैतूल

महाकुंभ पर बनेगी 'महासंगम' में हीरो बनेगा ये एक्टर

प्रयागराज में 45 दिन चले महाकुंभ का समापन हो चुका। लेकिन, अभी भी इसके भव्य आयोजन की चर्चाएं हो रही हैं। महाकुंभ में आम से लेकर खास लोगों ने जाकर संगम में डुबकी लगाई। सोशल मीडिया और मीडिया में महाकुंभ छाया रहा। अब महाकुंभ पर फिल्म का ऐलान हो गया। दरअसल, 'वर्चुअल भारत' प्रोडक्शन हाउस ने इस भव्य आयोजन पर फिल्म बनाने की घोषणा की है। 'महासंगम' नाम से बनने वाली इस फिल्म का फर्स्ट पोस्टर रिलीज हो चुका है और इसके साथ ही पता चल चुका है फिल्म में कौन से स्टार्स नजर आएंगे।

'वर्चुअल भारत' प्रोडक्शन हाउस ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिल्म का फर्स्ट लुक पोस्टर शेयर किया। इसमें अभिषेक बनर्जी, नीरज काबी और शहाना गोस्वामी नजर आ रही हैं। ये लोग संगम के बीच नाव में बैठे नजर आ रहे। नीरज काबी और शहाना गोस्वामी जहां आरती कर रहे हैं, वहीं अभिषेक बनर्जी सेल्फी लेते दिखाई दे रहे। प्रोडक्शन हाउस की तरफ से कैप्शन लिखा गया 'वर्चुअल भारत अपनी आने वाली फिल्म के ऐलान को लेकर उत्साहित है। कुंभ 2025 में फिल्माई गई, महासंगम परिवार, विरासत और संगीत की गहरी कहानी को पेश करती है. जिसका भावनात्मक ताना-बाना दुनिया के सबसे बड़े मानव समागम महाकुंभ के बीच बुना गय।

महाकुंभ 2025 पर फिल्म 'महासंगम' का ऐलान होते ही लोग काफी एक्साइटेड हो गए। अभिषेक बनर्जी, नीरज काबी और शहाना गोस्वामी स्टारर फिल्म 'महासंगम' को भारत बाला डायरेक्ट कर रहे हैं। इस फिल्म में एआर रहमान का म्यूजिक होगा। महाकुंभ 13 जनवरी से 26 फरवरी तक उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हुआ। इस भव्य आयोजन में 60 करोड़ से ज्यादा लोग शामिल हुए थे। महाकुंभ 2025 में आम लोगों से लेकर सेलिब्रिटीज पहुंचे और संगम में डुबकी लगाई।

रियल बॉक्स

'छावा' से दर्शकों पर छा गए विक्की कौशल

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

विक्की कौशल जब से फिल्म इंडस्ट्री में आए, उनमें एक बहुमुखी और संभावनाशील कलाकार की झलक देखी गई। ऐसा बहुत कम कलाकारों के साथ हुआ। बीते कुछ सालों में उन्होंने जितनी भी फ़िल्में की, वे अलग-अलग जॉनर की रही। वे टाइप्ड नहीं हुए। उन्होंने युद्ध आधारित फिल्म 'उरी' में जो किया वह 'सैम बहादुर' में कहीं दिखाई नहीं दिया। अब उसकी कोई झलक उनकी नई फिल्म 'छावा' में दिखाई नहीं देती। छत्रपति शिवाजी महाराज के बेटे छत्रपति संभाजी महाराज की जीवनी वाली ये फिल्म हर दर्शक के दिल को छू रही है। फिल्म में विक्की कौशल ने संभाजी महाराज की भूमिका निभाई है। उन्होंने अपने बेहतरीन अभिनय से किरदार में जान डाल दी। यही वजह है कि इसे उनके करियर की शानदार फिल्मों में बताया जा रहा। विक्की की इस फिल्म को लेकर दर्शकों का क्रेज कम नहीं हो रहा। महाराष्ट्र में तो यह फिल्म शानदार कमाई कर ही रही है। फिल्म देखने के बाद लोगों के रिएक्शन सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहे। कुछ लोग फिल्म देखने के बाद रो रहे हैं तो कुछ लोगों के रोंगटे खड़े हो गए।

फिल्म की कहानी दिखाती है कि मुगलों के वर्चस्व को खत्म करने के लिए उनके प्रयास कितने कठिन थे। यह इतिहास का ऐसा अध्याय है, जिसे अनदेखा किया जाता रहा। विक्की कौशल ने इस विरासत के साथ पूरा न्याय किया है। क्योंकि, जब उनका किरदार विश्वासघात और हार का सामना करता है, वे पल दिल की धड़कन तेज करने वाले हैं। फिल्म में लड़ाई को इतना वास्तविक रूप दिया गया कि दर्शकों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह इतिहास का ऐसा योद्धा है, जिसकी बहादुरी ने एक युग को फिर से परिभाषित किया। कौशल ने सिर्फ एक किरदार ही नहीं निभाया, वे एक राष्ट्र की ताकत और संकल्प का प्रतीक बन गए हैं। विक्की कौशल का अभिनय किसी बिजली की तरह कौंधने वाला है। संभाजी महाराज के किरदार में उनका अभिनय दमदार और बहुआयामी दिखाई दिया। एक ऐसा सेनापति जिसकी मौजूदगी पूरी फिल्म में महसूस की जा सकती है। विक्की कौशल ने 24 साल के योद्धा की भावना को बहादुरी के साथ जीवंत किया। उन्होंने उस युवा का किरदार निभाया, जिसने अकेले ने मुगल साम्राज्य घुटनों पर ला दिया था। भारतीय इतिहास के गुमनाम नायक के रूप में देखे जाने वाले संभाजी का चित्रण बेहतरीन तरीके से किया गया है।

न सिर्फ अभिनय बल्कि बॉक्स ऑफिस कलेक्शन के मामले में भी 'छावा' ने इस साल रिलीज हुई फिल्मों को पीछे छोड़ दिया। इस साल के शुरूआती डेढ़ महीने में अक्षय कुमार की 'स्काई फ़ोर्स' ने ही ठीक-ठाक कमाई कमाई की थी, पर 'छावा' ने उसे काफी पीछे छोड़ दिया। इस साल विक्की कौशल, रश्मिका मंदाना और अक्षय खन्ना की इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर इतिहास रचने की लगता है पूरी तैयारी कर ली। 'छावा' को सिर्फ अपने देश में ही नहीं, दुनियाभर में पसंद किया जा रहा। फिल्म ने रिलीज के शुरुआती 2 दिन में ही 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया था। दो सप्ताह में ये फिल्म 500 करोड़ के क्लब में एंट्री कर गई। आश्चर्य नहीं कि विक्की की ये फिल्म इस साल रिकॉर्ड तोड़ कमाई करने वाली पहली फिल्म बन जाए। बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की कमाई पर नजर रखने वाली एक एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक 'छावा' ने भारत में चार दिन में ही 168.60 ग्रॉस कलेक्शन किया। 'छावा' ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा रखा है। संभाजी महाराज के किरदार में विक्की ने जान फूंक दी है।

इस फिल्म को दर्शकों से अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा, इससे पहले भी भारतीय लीजेंड्स पर कई फिल्में बनी, जिन्हें देख दर्शकों के रोंगटे खड़े हुए। 'छावा' ने दर्शकों को मराठा इतिहास के बारे में बताया तो 'तानाजी- द अनसंग वॉरियर' एकदम सही फॉलोअप है। फिल्म में

अजय देवगन ने बहादुर सेनापति तानाजी मालुसरे का किरदार निभाया, जिन्होंने मुगलों से कोंढाणा किले को वापस हासिल करने में अहम भूमिका निभाई थी। संजय लीला भंसाली की 'बाजीराव मस्तानी' भी पेशवा बाजीराव (रणवीर सिंह) और मस्तानी (दीपिका पादुकोण) के रोमांस आधारित फिल्म है। 18वीं सदी के भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह फिल्म भव्य युद्ध दृश्य, विशाल सेट उस समय काल का जीवंत अनुभव कराते है। बाजीराव की पहली पत्नी काशीबाई का प्रियंका चोपड़ा का किरदार प्यार, वफादारी और बलिदान का प्रतीक है। अजय देवगन की फिल्म 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' भारत के सबसे ज्यादा सम्मानित स्वतंत्रता सेनानियों में से एक फिल्म है। यह फिल्म भगत सिंह के क्रांतिकारी आदर्शों, ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ उनकी लड़ाई और भारत की स्वतंत्रता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता दर्शाती है। शाहरुख़ खान ने फिल्म 'अशोका' में सम्राट अशोक की भूमिका निभाई। यह फिल्म अशोक के एक भयंकर योद्धा से एक दयालु शासक बनने के सफर पर आधारित है। ऐसी ही एक फिल्म 'मंगल पांडे' है, जिसमें आमिर खान ने मुख्य भूमिका निभाई। सिपाही मंगल पांडे ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ 1857 में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम को हवा दी थी।

संजय लीला भंसाली की दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह और शाहिद कपूर स्टारर फिल्म 'पद्मावत' इतिहास पर आधारित फिल्मों के मामले में एक मील का पत्थर मानी जाती है। इस फिल्म की कुल कमाई 300 करोड़ से ज्यादा थी। 'पद्मावत' ने पहले वीकेंड में बॉक्स ऑफिस पर 114 करोड़ का कलेक्शन किया था। इसके मुकाबले 'छावा' पहले वीकेंड में 121 करोड़ का कलेक्शन कर चुकी है। इसमें भी एक दिलचस्प तथ्य यह है कि 'पद्मावत' गुरुवार को रिलीज हुई थी और इसे वीकेंड कलेक्शन में 4 दिन मिले। जबकि, 'छावा' की 121 करोड़ की कमाई सिर्फ 3 दिन की है। 'छावा' ने संबीते रविवार को 49 करोड़ का कारोबार किया, जो इस साल एक दिन में बॉक्स ऑफिस पर सबसे बड़ा कलेक्शन है। अब विक्की कौशल की ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर और भी बड़े लैंडमार्क को पार करने की तैयारी में है। अभी तक इस साल रिलीज हुई फिल्मों में सबसे ज्यादा कमाई अक्षय कुमार स्टार की 'स्काई फोर्स' ने की। उसने बॉक्स ऑफिस पर 130 करोड़ का नेट कलेक्शन किया। इसका वीकेंड कलेक्शन 73 करोड़ था। जबकि, 'छावा' के पहले 3 दिन का कलेक्शन 'स्काई फोर्स' के वीकेंड कलेक्शन से तो बहुत ज्यादा रहा।

चारों तरफ तरफ विक्की कौशल की 'छावा' का डंका बज रहा। जो भी दर्शक 'छावा' देखकर थिएटर से निकल रहा, वह विक्की कौशल की तारीफ करते हुए नहीं थकता। इनमें कई दर्शक फिल्म देखकर इतने भावुक हो गए कि संभाजी महाराज के जयकारे लगाने लगे। एक खास बात यह भी कि फिल्म में सभी एक्शन सीन विक्की कौशल ने खुद किए हैं। अभी तक यह अक्षय कुमार के बारे में चर्चित था कि कई मुश्किल एक्शन सीन उन्होंने खुद किए! अब विक्की ने भी इस फिल्म में वही किया। फिल्म के एक्शन डायरेक्टर परवेज शेख के मुताबिक विक्की कौशल ने कहा था कि सारे एक्शन सीन्स के लिए बॉडी डबल का इस्तेमाल न किया जाए। इनमें एक बेहद मुश्किल सीन वो था जब औरंगजेब, संभाजी महाराज को जंजीरों में बांध लेता है। इस सीन में विक्की कौशल के हाथ-पैर बंधे और वे खून में लथपथ नजर आए। परवेज के मुताबिक, उस सीन की शूटिंग में विक्की को जंजीरों से बांध दिया गया था और उन्हें 2-3 घंटों तक जंजीरों में जकड़ कर खड़े रहना पड़ा। वो शॉट दिन के साथ-साथ रात में भी फिल्माए गए थे। उनकी मसल्स या किसी चीज में खिंचाव भी आ गया था। इस वजह से शूटिंग रोकनी पड़ी, इससे कुछ देरी हुई। लेकिन, फिजियोथेरेपी कराने के बाद विक्की ने फिर शूटिंग की। जो शूट किया गया था, वह बहुत मुश्किल था। विक्की कौशल मशहूर एक्शन डायरेक्टर श्याम कौशल के बेटे हैं। इसलिए एक्शन की बारीकियां तो उन्हें विरासत में ही मिली होंगी। यह पहली बार है, जब विक्की कौशल ने मुश्किल एक्शन सीन किए।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सलमान और एटली की फिल्म संकट में

सलमान खान और निर्देशक एटली के साथ काम करने की खबरों ने फैंस को एक्साइटेड कर दिया। रिपोर्ट में दावा किया जा रहा था, कि यह एक मेगा बजट एक्शन ड्रामा फिल्म होगी। जिसमें साउथ के दिग्गज अभिनेता रजनीकांत या कमल हासन भी नजर आ सकते हैं। हालांकि, रिपोर्ट्स से पता चला है, कि यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। इसके पीछे का कारण अभी तक साफ नहीं हुआ है, लेकिन मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, फिल्म पर काम आगे नहीं बढ़ रहा है।

शाहरुख खान के साथ 'जवान' की बड़ी सफलता के बाद, एटली ने वरुण धवन के साथ 'बेबी जॉन' पर काम शुरू किया। इस फिल्म के प्रमोशन के दौरान, उन्होंने क्लू दिया कि उनकी अगली फिल्म में एक बड़ा सुपरस्टार शामिल हो सकता है। उनके इस बयान ने यह अटकलें तेज कर दी थीं, कि सलमान खान उनकी अगली फिल्म में नजर आ सकते हैं। अब खबरें आ रही हैं कि एटली अपनी अगली फिल्म में साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के साथ काम करेंगे, इससे सलमान खान के फैंस में डिसएप्वाइंट हुए जो उन्हें इस बड़े प्रोजेक्ट में देखने के लिए एक्साइटेड थे।

सलमान और एटली की फिल्म एक मेगा-बजट पुनर्जन्म ड्रामा होगी, इसमें सलमान खान को पहली बार योद्धा के अवतार में पीरियड युग में दिखाने की प्लानिंग थी। जबकि, वर्तमान युग की कहानी को सीक्रेट रखा गया था। फिल्म को लेकर इंडस्ट्री के सूत्रों से खबर सामने आई कि यह एक बेहद महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट था, जिसमें एटली दर्शकों के लिए एक नई सिनेमा की दुनिया बनाने की प्लानिंग बना रहे थे। इसमें जबरदस्त एक्शन, ड्रामा, रोमांच और इमोशंस शामिल होने वाले थे।

इसके अलावा, यह भी दावा किया गया था, कि निर्देशक फिल्म में एक और दिग्गज अभिनेता को कास्ट करने की प्लानिंग बना रहे थे। कमल हासन या रजनीकांत में से किसी एक के फिल्म में शामिल होने की उम्मीद थी। फिलहाल, अब जब यह प्रोजेक्ट ठंडे बस्ते में चला गया है, सलमान खान के फैंस को उनकी अगली फिल्म की ऑफिशियल अनाउंसमेंट का इंतजार है। वहीं, एटली और अल्लू अर्जुन की जोड़ी से दर्शकों को एक बड़े धमाके की उम्मीद है।

अमेरिकी पुलिस ने जब सुनील शेट्टी को पकड़ा

सुनील शेट्टी कई फिल्मों में काम किया है और अपनी बेहतरीन अदाकारी से लोगों का दिल जीता। सुनील शेट्टी की फिल्म 'कांटे' साल 2002 में रिलीज हुई थी। उन्होंने इस फिल्म से जुड़ा एक किस्सा बताया। एक्टर ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया है कि साल 2001 में इस फिल्म की शूटिंग अमेरिका में चल रही थी और उसी साल अमेरिका में हमला हुआ था। जब सुनील शेट्टी फिल्म 'कांटे' की शूटिंग के दौरान अमेरिका में थे तो उनके साथ एक घटना हुई, जो कि बेहद डरावनी थी।

एक्टर ने इस घटना का खुलासा किया।

सुनील शेट्टी ने चंदा कोचर के यूट्यूब चैनल पर साल 2001 में उनके साथ हुई घटना का जिक्र किया। एक्टर ने बताया है कि उन्हें एक ऐसी घटना का सामना करना पड़ा कि वो हैरान रह गए थे। सुनील शेट्टी ने बताया कि मुझे गन प्वाइंट पर रोका गया, क्योंकि मेरी दाढ़ी थी। हमने कुछ दिन बाद शूटिंग की। मैं होटल जा रहा था और मैं लिफ्ट में घुसा और मैं अपनी चाबी भूल गया था। वहां एक अमेरिकी आदमी था, जो मुझे घूरे जा रहा था और मैंने कहा, क्या आपके पास चाबी है? क्योंकि मैं अपनी चाबी भूल गया हूं और मेरा स्टाफ बाहर गया है।

सुनील शेट्टी ने आगे बताया कि वह अमेरिकी बाहर भागा और हंगामा करने लगा तो सड़क से पुलिसकर्मी अंदर आए। उन्होंने मुझसे कहा कि घुटने पर बैठो नहीं तो हम गोली मार देंगे। मैं घुटने के बल बैठ गया और मुझे हथकड़ी लगाई गई। मैं एकदम शॉक में था कि ये क्या हो रहा है। उसी समय प्रोडक्शन वाले आ गए और उनमें एक होटल मैनेजर पाकिस्तानी था, वो वहां आए और उन्होंने कहा कि ये एक एक्टर हैं। मुझे नहीं पता था कि आगे क्या होने वाला है। बहुत हंगामा था और मेरी दाढ़ी जॉलाइन तक वाली दाढ़ी थी।

सितारों का सुख-चैन उनकी लग्जरी वेनिटी वेन में

अशोक जोशी

फिल्म सितारों से जुड़ी हर बात लोगों में चर्चा का विषय होती है। हर कोई उनकी लाइफस्टाइल, फैशन, ब्यूटी, फूड हैबिट्स और उनसे जुड़ी हर बात जानना चाहता

है। उनकी वैनिटी वैन शूटिंग के दौरान उनके घर के कमरे का काम करती है। स्टार्स उसी में खाते-पीते, तैयार होते और सोते हैं। तभी तो वैनिटी वैन्स के अंदर का इंटीरियर स्टार्स की पसंद से बनाए जाते हैं। इनका इंटीरियर किसी 5 स्टार होटल के कमरे से कम नहीं होता।

फिल्मी सितारों की शानदार जिन्दगी सभी को आकर्षित करती है। हर कोई ये जानना चाहता है कि उनका पसंदीदा सितारा किस तरह के घर में रहता है, किस तरह के बिस्तर पर सोता है, कौन सी कुर्सियां होती हैं जिन पर बैठकर वो सुस्ताता है। बस इसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए अक्सर सितारों के घर की या लिविंग एरिया की एक झलक मिलती है, तो उसे भी कैमरे में कैद कर वायरल कर दिया जाता है। एक जमाना था जब बड़े से बड़े सितारे शूटिंग से पहले और शूटिंग के बाद खुले आसमान के नीचे ठंड, गर्मी और बरसात में बैठे रहते थे। मेगास्टार को छोड़ दिया जाए, तो बड़े फिल्मी सितारे ग्रीन रूम या मेकअपरूम से महरूम थे। खुले में ही उनका मेकअप किया जाता था।

'तीसरी कसम' की शूटिंग की आउटडोर शूटिंग के दौरान वहीदा रहमान बहुत परेशान थी। क्योंकि, वहां महिला आर्टिस्ट के लिए वाशरूम की कोई सुविधा नहीं थी। हेमा मालिनी ने भी 'शोले' की शूटिंग के दौरान यह शिकायत दर्ज की थी, कि आउटडोर शूटिंग के दौरान यदि कोई सीन बदलता है, तो उन्हें भी कपड़े बदलने में मुश्किलों को सामाना करना पड़ता था। उन दिनों स्टूडियो के मेकअप रूम कॉमन होते थे। आरके स्टूडियो के हालात यह थे कि राजकपूर के मेकअप रूम में रणधीर कपूर और ऋषि कपूर तक को घुसने की इजाजत नहीं थी। यह बात अलग थी कि राजकपूर ने केवल देव आनंद को अपने मेकअप रूम को इस्तेमाल करने की छूट दी हुई थी।

अब जमाना बदल गया है। अब छोटे मोटे सितारे भी स्टूडियो की गर्मी में खुद को झोंकने के बजाए शानदार वेनिटी वेन में सुस्ताते है। बड़े सितारों की वैनिटी वैन तो किसी भव्य बंगले से भी ज्यादा महंगी और सुविधा सम्पन्न होती है। वैनिटी वैन पहले सिर्फ़ हॉलीवुड स्टार्स के पास होती थी, बॉलीवुड स्टार्स में यह चलन नहीं था। बॉलीवुड में इसे लाने का श्रेय एक्ट्रेस पूनम ढिल्लो को जाता है। 1991 में जब वे विदेश गई थी, तब वैनिटी वैन से इतनी खुश हुईं कि अपने लिए इसे भारत में इसे मंगवा लिया। दक्षिण भारत में एनटीआर जैसे सितारों के पास वैनिटी वेन पहले से उपलब्ध थी, जिसका उपयोग वे चुनाव के दौरान विजय रथ के रूप में करते थे। पूनम ढिल्लो के बाद बॉलीवुड में भी इसका चलन शुरू हो गया। आज सभी बड़े सितारों के पास खुद की वैनिटी वैन है, जहां वह सीन करने से पहले और बाद में सुस्ताते हैं, बडे पत्रकारों को साक्षात्कार देते हैं। यहां उनके खाने-पीने से लेकर व्यायाम करने बार रूम से लेकर प्रोजेक्शन रूम तक की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

बॉलीवुड स्टार्स अपने घर की तरह अपनी वैनिटी वैन को भी काफी लग्जरी रखते हैं, ताकि घर से बाहर भी उन्हें घर जैसा ही एहसास हो। साथ ही शूटिंग के वक्त उनकी वैनिटी वैन उनके घर का काम करती है। वैसे तो इंडस्ट्री के सभी स्टार्स के पास होटल, लग्जरी घर और घूमने फिरने के लिए महंगी कारों से लेकर प्राइवेट जेट तक हैं। लेकिन, इनकी वैनिटी वैन भी उनके स्टेटस, पावर और उनका रुतबा दर्शाती है। फिल्मी सितारों के लिए वैनिटी बनाने में दिलीप छाबड़िया का नाम सबसे ऊपर आता है, उन्होंने सितारों के लिए एक से बढ़कर एक वैनिटी वैन बनाकर खुद सितारा वैनिटी वैन डिजाइनर का दर्जा हासिल कर लिया। उनकी कंपनी डीसी द्वारा निर्मित वैनिटी वैन उसी तरह सितारा दर्जा हासिल कर चुकी है जिस तरह कि ड्रेस डिजाइनिंग में मनीश मल्होत्रा सितारा दर्जा हासिल कर चुके हैं। कम ही लोग जानते हैं कि इंदौर में भी बरसों से सितारों की वेनिटी वेन बनाने का काम जारी है। इसमें भागीरथ ब्रदर्स को महारत हासिल है।

सितारों की वैनिटी वैन किसी आलीशान घर से कम नहीं है। सलमान खान, शाहरुख खान, कैटरीना कैफ, अल्लू अर्जुन, ऋतिक रोशन, आलिया भट्ट, अजय देवगन, शिल्पा शेट्टी, महेश बाबू की वैनिटी का लुक देखकर लगता है कि घर को कोई आलीशान और

आरामदायक कोना है। वैसे शिल्पा शेट्टी की वैनिटी वैन में एक खास कोना है, जहां वो योगा कर सकती हैं। इस ओपन स्पेस पर शिल्पा शेट्टी वैनिटी वैन में रहकर भी अपनी फिटनेस का ध्यान रख सकती हैं। इसके अलावा शाहरुख खान और ऋतिक रोशन की वैनिटी वैन ऐसा एहसास करवाती हैं जैसे किसी गेमिंग स्पेस में आ गए हों। अनिल कपूर की वैनिटी वैन कथित तौर पर 2009 में किसी भी स्टार की सबसे महंगी वैन थी, जिसकी कीमत 1.91 करोड़ रुपए थी।

शाहरुख खान के लिए दिलीप छाबड़िया द्वारा डिजाइन की गई वैनिटी वैन की कीमत करीब 4 करोड़ की थी। वैन एक कस्टमाइज्ड वोल्वो बीआर-9 थी। 14 मीटर लम्बी इस वेन में एक फ्यूचरिस्टिक इंटरनल लाउंज डिपार्टमेंट है। इसमें बैकलिट और चमकीले ग्लास का फर्श है। इसकी छत को लकड़ी के पैनलों से सजाया गया है। इसमें एक पेंट्री सेक्शन, अलमारी सेक्शन, मेकअप चेयर, शौचालय कक्ष और एक इन-बिल्ट शॉवर भी है। वेन में आईपैड द्वारा नियंत्रित कई कार्य थे, जिनमें पर्दे और रोशनी भी शामिल है। बॉलीवुड की सबसे स्टाइलिश वैनिटी वैन सलमान खान की है। उनकी वैनिटी में घुसते ही सलमान की बड़ी सी फोटो दिखाई देगी। इसमें एक रिहर्सल रूम भी है, जहां वो अपने सीन की रिहर्सल करते हैं। इसके अलावा इसमें एक मीटिंग रूम, बेडरूम और रेस्ट रूम है। हैरानी की बात ये है कि इसमें एक पार्किंग एरिया भी है। दस मीटर लम्बी इस वेन में जगह जगह सलमान के हाथों बनाई गई पैंटिंग्स भी है।

ऋतिक की वैनिटी में उनका टेक्नो प्यार साफ़ नज़र आता है। उनकी वैनिटी में 43 हिस्से हैं, एक ऑफिस और लाउंज, दूसरा बेडरूम और तीसरा वॉशरूम। इसमें लगी ब्लू लाइट्स किसी पार्टी में आने का फील देती हैं। पूरी वैन में ब्लैक एंड व्हाइट वुड और ग्लास का इंटीरियर है। इनके वैनिटी की लंबाई 12 मीटर है। अजय देवगन की वैनिटी वैन किसी स्पोर्ट्स कार जैसी दिखती है। उनकी वैनिटी की सबसे खास बात है इसका जिम। इसमें खास तरह की वेट लिफ्टिंग मशीनें लगी हैं। पहले अजय देवगन को शूट के दौरान कई बार वर्कआउट के लिए जिम जाना पड़ता था, इसलिए उन्होंने वैनिटी में ही जिम बनवा लिया। जिम के अलावा इसमें ऑफिस, किचन, रेस्टरूम और आराम करने के लिए जगह बनी है। संजय दत्त की वैनिटी वैन का नाम वेन एएक्सएल रखा हुआ है. इस वैनिटी की कीमत करीब 3.15 करोड़ है। इसमें भी जिम की सुविधा मौजूद है।

दक्षिण भारत में वैनिटी वैन का इतिहास बॉलीवुड से पुराना है। एनटीआर और एमजीआर इसका भरपूर उपयोग करते रहे हैं। वैसे तो इन सितारों की वैनिटी वैन एक से बढ़कर एक है, लेकिन पुष्पा मूवी के स्टाइलिश स्टार अल्लू अर्जुन की वैनिटी वैन देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी लग्जरी होटल में ठहरे हों। महेश बाबू के पास 6.2 करोड़ की वैनिटी वैन है। फिल्मी सितारों से अलहदा टीवी पर कॉमेडी शोज के चर्चित नाम कपिल शर्मा जिन्हें बमुश्किल ही कभी आउटडोर शूटिंग का काम पड़ता है उनके पास भी दिखावा करने के लिए सबसे बड़ी और महंगी वैनिटी वैन है।

बॉलीवुड के अभिनेता ही नहीं अभिनेत्रियां भी शानदार वैनिटी वैन की मालकिन हैं। आलिया खुद जितनी सुंदर हैं, उनकी वैनिटी भी उतनी ही सुंदर है। उनकी पर्सनालिटी की झलक उनके वैनिटी की सजावट में नज़र आती है। बॉलीवुड में सबसे कलरफुल और खूबसूरत वैनिटी आलिया के पास है। लेटेस्ट टेक्निक के साथ यह घर की तरह काफ़ी आरामदायक है। वैन की इंटीरियर शाहरुख की पत्नी गौरी खान ने डिजाइन किया, जिसका लुक बहुत ही शानदार है। कैटरीना कैफ की वैनिटी वैन इंस्टा एस्थेटिक वाइब्स देती है. उनके पूरे वैन को ऐसा बनाया गया है, जैसे एक्ट्रेस को अपने लाइफ में व्यवस्थित रहना पसंद है। एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा को चमक दमक में रहना पसंद नहीं, उन्हें सिंपल लाइफ बहुत पसंद है। ठीक वैसे ही उनकी वैनिटी वैन को भी सजाया गया है। इस लिस्ट में दीपिका पादुकोण का भी नाम शामिल है। दीपिका की लग्जरी वैनिटी की कीमत करीब 2 करोड़ रुपए बताया जाता हैं।

होशवालों को खबर क्या...!

प्रकाश पुरोहित

आ दोनों दोस्त मदहोशी में देर रात कार से चले जा रहे थे, तभी पास वाले की नजर आगे सड़क पर गई। देखा, रात्रिकालीन पुलिस ने डेरा जमा रखा है और हर आती-जाती कार का मुंह सूंघ रहे हैं। यह खबर तो थी कि आजकल पुलिस के पास यही काम रह गया है, लेकिन अंदाजा नहीं था कि देखना भी पड़ जाएगा। उसने कार चला रहे दोस्त को बताया- 'यार वसूली गैंग खड़ी है, कार रोक।' कार रुक गई तो दोस्त का दिमाग चला- 'चल उतर कर पीछे बैठ जाते हैं।' दूसरे को तो इतना भी होश नहीं था कि पूछ ही लेता- 'क्यों!' जैसा कहा, वैसा कर दिया। दोनों पीछे की सीट पर मजे से पसर कर बैठ गए।

अब बारी पुलिस की थी। कार रुकी भी और हेड-लाइट्स जल रही थी! थोड़ी देर तो देखा कि कार

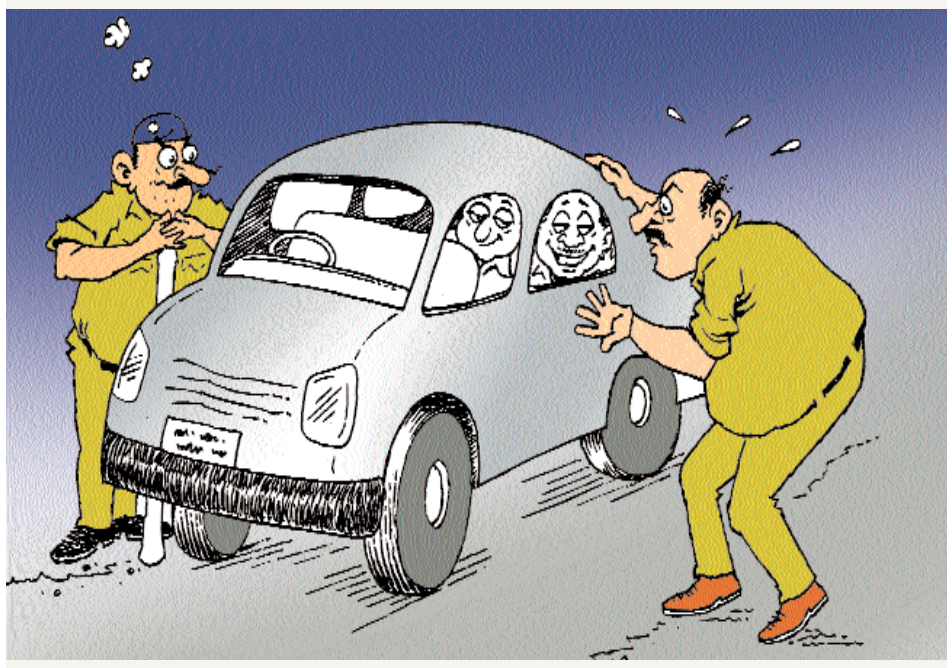

आगे आए, मगर जब टस से मस नहीं हुई तो एक सिपाही को मौका-ए-वारदात पर भेजा कि पता करे क्या बात है। सिपाही कार के पास पहुंचा तो क्या देखता है कि कार कि ना सिर्फ हेडलाइट्स ऑन थी, बल्कि कार चालू भी थी मगर ड्राइवर-सीट पर कोई नहीं था। पास वाली सीट पर भी कोई नहीं। फिर उसने अंदर झांका तो देखा दो युवक बैठे हैं मस्ती में।

पूछा- 'क्या हो रहा है।' लड़खड़ाता जवाब मिला- 'हम तो शराब पिए हुए हैं और हमारा ड्राइवर भाग गया पुलिस देख कर, शायद उसने भी पी रखी होगी।' फिर दोनों लुढ़क गए।

सिपाही के लिए यह अनोखी घटना थी। उसने दूर खड़े बड़े साहब को रिपोर्ट दी। साहब भी चल कर कार तक पहुंचे और फिर से वही सवाल और वही जवाब!

'ड्राइवर भाग गया तो अब कार आप लोग ही साइड में कर दें।' साहब ने आदेश दिया।

'हम कैसे कर सकते हैं, हमने तो शराब पी रखी है और कानून यही कहता है ना कि शराब पी कर गाड़ी नहीं चलाना चाहिए तो हमसे अपराध करने के लिए क्यों कह रहे हैं?' पीछे की सीट ने जवाब दिया।

'तो फिर क्या कार रस्ते में ही खड़ी रहेगी?' साहब नाराज होने लगे।

'हम क्या बताएं, आप ही हटवा दीजिए। हम तो स्टेयरिंग को हाथ भी ना लगाएं। आप ही चालान बना देंगे।'

'ड्राइवर का नाम?'

'नाम तो नहीं पूछा!'

'क्यों, क्या तुम्हारा ड्राइवर नहीं था?'

'नहीं, शराब पीने तो हम खुद ही कार चला कर गए थे ना, उस समय पी थोड़े ही थी।'

'तो फिर ये ड्राइवर...?'

'हम तो जब पी कर बाहर निकले तो टैक्सी तलाश रहे थे कि तभी ये ड्राइवर आया और बोला सौ रुपए दे देना, घर छोड़ दूंगा। हमें भी लगा, कार यहां पटक कर जाने से तो अच्छा है सौ रुपए में घर पहुंच जाएंगे। जब से पुलिस ने रात की चेकिंग शुरू की है ना, इस तरह के ड्राइवर खड़े ही रहते हैं होटलों के सामने। कुछ होटल तो दारू के साथ ड्राइवर भी सप्लाय करती हैं। पहले भी ऐसा कर चुके हैं हम। या तो किसी खाने वाले को साथ लाते हैं या फिर ड्राइवर किराए पर ले लेते हैं।'

'अरे रामसिंह, देखो जरा स्टाफ में किसी को कार चलानी आती है?'

लौट कर आया तो साथ में सिपाही था 'सर इसे आती है कार चलाना।'

सिपाही-ड्राइवर ने कार का मुआयना किया और हाथ ऊपर कर दिए 'ये तो इ वी और ऑटोमैटिक है, अपन ने कभी नहीं चलाई।'

साहब और दो सिपाही बाहर खड़े हैं, अंदर मदहोश बैठे मजा ले रहे हैं पुलिस की मजबूरी का।

'अब इनका क्या करें...?' सिपाही ने साहब से पूछा।

'मुझे क्या मालूम, क्या करना है, मुझे तो बाइक चलानी भी नहीं आती।' कैप उतार कर, सिर खुजलाते साहब ने जानकारी दी।

'एक काम करिए, पार्किंग लाइट चालू कर दीजिए और हेड लाइट्स बुझा दीजिए।' साहब ने रिक्वेस्ट की!

'हमने तो पी रखी है, हाथ नहीं लगाएंगे, अपराध है ये तो...!' दोनों ने एक स्वर में इनकार कर दिया। साहब और सिपाही थोड़ी देर तो बंद-चालू खेलते रहे, लेकिन जब कुछ हल निकला तो घड़ी देखी।

'अरे एक बज गए, अपना तो ड्यूटी टाइम खत्म, अब सुबह वाले जाने इनका क्या करना है!' कहते हुए राहत की सांस ली और वहां से सरपट चले गए। बाकी स्टॉफ भी विदा हो गया कि आज का दिन ही खराब था।

कुछ समय बाद दोनों पीछे की सीट से उठे और अपनी-अपनी जगह आ कर बैठ गए, कार स्टार्ट की और घर चले गए।

यह चुटकुला इसलिए याद आ रहा है कि इन दिनों हमारे शहर में भी रात को पुलिस की सारी मुस्तैदी सिर्फ कार सवार शराबियों को पकड़ने में है कि अच्छी वसूली, कम समय में हो जाती है। कोई नेता को फोन भी नहीं करता और यह भी नहीं बताता कि किस तुर्रम खां की औलाद है या किस भिया का पट्ठा है। यही नहीं, रात्रिकालीन सेवा के लिए बार के आसपास आपातकालीन ड्राइवर भी बहुतायत में मिलने लगे हैं। सोच रहा हूं, कभी चुटकुला सही में घटित हो जाए तो, पुलिस बेचारी क्या करेगी!

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

उपलब्धता जितनी ज्यादा, मूल्यांकन उतना कम

छा ये कैसा विषय है आप सोच रहे होंगे। थोड़ा क्लिष्ट भी लग रहा होगा। मैं इसका आपको अंग्रेजी में अर्थ बताती हूँ जितनी अवेलेबिलिटी होगी उतना डिवेल्यूएशन होगा। यहां मैं अर्थशास्त्र पर बात नहीं कर रही पर रिश्तों में भी डिमांड और सप्लाई अपना नियम है जिसके नतीजे में आपको क्या हासिल होता है? रिश्तों में जब हम सदा उपलब्ध रहते है तो यह कहां सिद्ध होता है कि लोग आपकी बेकदरी करते हैं। यहां मैं अपने एक ख़ास मित्र की बात का उदाहरण देना चाहूँगी।

मैंने बचपन से उन्हें देखा है। हर बात में आज्ञाकारी, एक पुकार पर दौड़ के चले आना, अपना काम छोड़कर दूसरे की मदद करना, स्वास्थ्य कितना भी खराब हो फिर भी लोगों के लिये हमेशा उपलब्ध रहना। चूंकि वो बड़े ओहदे पर रहे तो उन्होंने बड़े लोगों से लेकर घरेलू काम करने वालों तक, सबकी मदद की। पर उनकी इक बात मुझे बहुत अच्छी लगी। उन्होंने पद छोड़ने के बाद भी अपने सोर्स, लोगों से कुछ ऐसे संबंध बनाए थे कि हर इंसान उनके प्रति कृतज्ञ रहता है मन ही मन। वो सीधे सादे है तो मदद लेने वाला व्यक्ति ये कहता पाया जाता है ''अरे वो तो बुद्धु है मैं उससे झटके में काम करा लूँगा''। बात ये नहीं है कि मदद करने लायक उनके

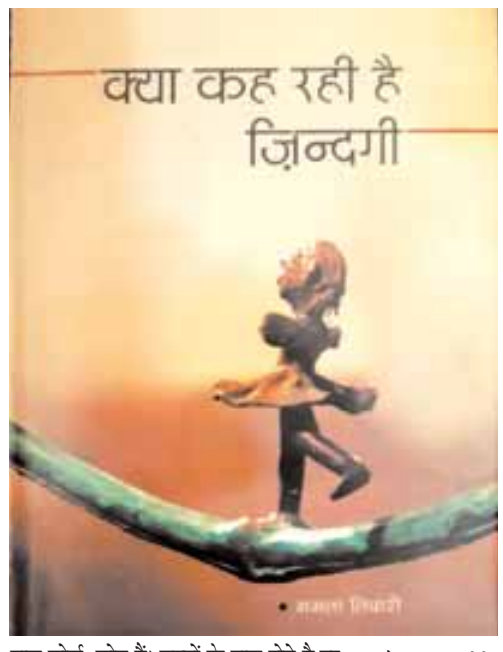

पास सोर्स, लोग हैं। बहुतों के पास होते है पर क्या सबका इतना बड़ा दिल होता है, कि आगे बढ़कर वो पूछें क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं?

बहुधा लोग कहते है कौन झंझट में पड़े। मुझे उन पर बहुत गुस्सा आने लगा। मैंने उनसे कहा कि आपका लोग पीठ पीछे मज़ाक उड़ाते है, आप सब के लिये उपलब्ध रहते हो अपने आपको थकाते हो बीमार हो जाते है, अब सिर्फ अपने बारे में सोचो। थोड़े दिन उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की पर ये वो इंसान थे जो भीड़ में खुशी ढूंढते थे। दूसरों का दुःख कम करके सुकून पाते थे। मैंने उनसे कहा भाई जैसे हो वैसे रहो। हमें आप इसी रूप में पसंद हो। वो प्रसन्नतापूर्वक मदद के काम में जुट गए, चलिए माना साठ के बाद भी उनका दिमाग शरीर सब अच्छे से चलता है कि वो अपना कर्म करें।

तो ये थी उनकी बात। वास्तव में मैं ऐसा नहीं चाहती। मैं लोगो से प्रैक्टिकल होने की उम्मीद करती हूँ क्योंकि मैंने उन्हें दुःखी होते देखा जब लोगो ने औपचारिकता वश थैंक्स नहीं दिया। इसी तारीफ, प्रशंसा के लिये वो तरसते थे। अगर उन्होंने 'नेकी कर दरिया में डाल' का फलसफा नहीं सीखा तो वे दुःखी ही रहेंगे। अब चूंकि उनकी इतनी उम्र है कि मैं उन्हें समझा नहीं सकती, उन्हें वैसा ही रहने दिया जाए। पर हम तो सीख सकते है अर्थशास्त्र से। डिमांड पर ही सप्लाई होती है जैसे मांग बढ़ती है आपूर्ति बढ़ानी पड़ती है। पर संबंधों में ऐसा नहीं होता। अगर आप हर समय आसानी से उपलब्ध होते रहेंगे आपकी डिमांड को खाते में डालकर आपसे ही पूर्ति करवाएंगे। कहने का अर्थ ये है कि अगर आपको भी प्रशंसा की उम्मीद है तो अपनी उपलब्धता या सप्लाई को कम कर दीजिये। लोगों को डिमांड करने दीजिए, तब आपकी कीमत बढ़ेगी।

मुझे मालूम है समाज सेवा उम्मीद से नहीं की जानी चाहिए पर जो आपकी मदद के लिए तत्पर हैं उनके लिये आभार के दो बोलना तो बनते है। उन्होंने आपके लिये इतना किया क्या आप उनसे मुस्कुरा के पूछ नहीं सकते रोज सुबह सवेरे और क्या कह रही है जिंदगी?

जब तक बन पड़े
कर दो सबकी मदद
इक वक्त पर
मुझे भी पड़ सकती है ज़रूरत
ऐसी उम्मीद हरगिज़
मत करना
ये नेकी कर दरिया में
डालने का जमाना है
अपना सुख-दुख हमें
ही निभाना है।

होना...

फोटोः गिरीश शर्मा

दृष्टिकोण

श्याम बोहरे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

यह विज्ञान है क्या जिस पर सभी खरा उतरना चाहते हैं?

वि ज्ञान को जानते हैं और जो नहीं जानते हैं, जो समझते हैं और जो नहीं भी समझते हैं, सभी को विज्ञान की जरूरत होती है अपनी बात को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए। 'यह वैज्ञानिक है' जैसे वाक्य कहना आम बात है। पैर छूने वाले को सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे देते हैं तो पैर छूने वाले के शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है; पेशाब करते समय कान में जनेऊ लपेटने से कान के पास एक नस दबती है जिससे मूत्र विसर्जन आसानी से होता है और किडनी स्वस्थ रहती हैं, तिलक लगाना एकदम वैज्ञानिक है; इस तरह के अनेकों वाक्य हम कहते-सुनते रहते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी के अलावा अकादमी जगत में भी विज्ञान का ठप्पा लगाना श्रेष्ठता का मापदंड माना जाता है। तभी तो राजनीति शास्त्र को पॉलिटिकल साइंस, समाजशास्त्र के विषय को सोशल साइंस कहा जाता है। 1969 में परीक्षा में लोक प्रशासन विज्ञान के या कल प्रश्न का उत्तर देते हुए सिद्ध करने की कोशिश की थी कि अमूक लक्षण नियमों, सिद्धांतों और प्रमाणों के आधार पर विज्ञान की श्रेणी में आता है।

यह विज्ञान है क्या जिस पर सभी खरा उतरना चाहते हैं? सभी चाहते हैं कि उनकी बात, उनके तरीके, व्यवहार विधि को, इलाज को, उनके विषय को विज्ञान माना जाए। दरअसल, विज्ञान काम करने का, सोचने का, व्यवहार करने का तरीका है। विज्ञान हमें सिखाता है कि कल्पना करते हैं या सोचते हैं या अवलोकन करते हैं वह सच है या नहीं जानने के लिए उसे बार-बार ध्यान से देखते हैं, उससे संबंधित पर्याप्त जानकारी (डाटा) इकट्ठी करते हैं, तथ्य जुटाते हैं, उसका वर्गीकरण कर उसे व्यवस्थित करते हैं, उसका हर समय, हर संभव परीक्षण करते हैं, प्रयोग करते हैं, प्रश्न और तर्क करते हैं फिर विश्लेषण कर निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। मतलब तथ्यपरक, पर्याप्त जानकारी, प्रयोग द्वारा प्रमाणित करना विज्ञान का तरीका है। विज्ञान का यह तरीका जिंदगी के सभी सामाजिक पहलुओं पर भी लागू होता है। संक्षेप में कहें तो पर्याप्त तथ्यों को व्यवस्थित तरीके से रखते हुए प्रश्नों, तर्कों की कसौटी पर कसते हुए बार-बार परख कर निष्कर्ष पर पहुंचने का तरीका वैज्ञानिक है। इसके अभाव में बात करना या मान लेना वह अवैज्ञानिक होगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू वैज्ञानिक मानसिकता पर जोर देते थे। भारत के संविधान के अनुच्छेद 51 में नागरिकों के मूल कर्तव्य दिए गए हैं जिनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार करते रहने की भावना का विकास करना शामिल है। विज्ञान का तरीका जितना तर्कसंगत, विवेक आधारित और स्वाभाविक नजर आता है वास्तविक व्यवहार में अक्सर वैसा होता नहीं है। बहुत पढ़े लिखे विद्वान, श्रेष्ठ और काबिल वैज्ञानिक भी जो अपना व्यावसायिक (प्रोफेशनल) काम वैज्ञानिक तरीकों से करने में निपुण और सिद्ध होते हैं वे प्रयोगशाला या कार्य स्थल से बाहर अपने घर में, समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उपयोग करते नजर नहीं आते। उदाहरण के लिए मुहूर्त देखकर, नारियल फोड़ कर रॉकेट लॉन्च करते हैं। वैज्ञानिक तरीके से किए गए सही काम का श्रेय प्रमाणित नहीं की जा सकने वाली अदृश्य शक्ति को देते हैं।

हरिशंकर परसाई कहते हैं कि एक वरिष्ठ और सम्माननीय साथी से उन्होंने तर्क करना, वैज्ञानिक समाजवाद, नास्तिकता, तर्क का महत्व सरीखी अनेकों बातें सीखी थीं। वे उनका बहुत सम्मान करते थे। एक

दिन देखा कि वरिष्ठ सज्जन उघडे बदन पर जनेऊ पहने तिलक लगाए सत्यनारायण की कथा करवा रहे थे। परसाई आगे लिखते हैं, मानो एंबुलेंस ने ही मरीज को कुचल दिया हो।

हम जीवन में तथ्यपरक, तर्कसंगत और प्रामाणिक बातों को जानते हुए भी सामाजिक, पारिवारिक व धार्मिक परंपराओं, लोक में प्रचलित, सम्मान या मर्यादा, किसी की भावना आहत ना हो आदि के दबाव में अवैज्ञानिक बातों को मानते और करते रहते हैं। प्रश्न नहीं करते, तर्क नहीं करते। कोई कार्य कारण संबंध न होते हुए भी पत्नी, मां-पिताजी, बुजुर्गों, सत्ता की नाराजगी को देखते हुए अमुक दिन अमुक काम नहीं करते, किसी पदार्थ का उपयोग नहीं करते या करते हैं, मंगलवार को बाल नहीं कटवाते, अमुक दिन यह नहीं खरीदना या मुहूर्त देखकर खरीदना, मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को अशुद्ध मानना, पानी गंदा होते हुए भी पवित्र माने जाने वाले जलाशय में नहाना, आचमन करना आदि सैकड़ो बातें जाने-अनजाने में करते रहते हैं। चौंकिए नहीं, महान वैज्ञानिक भी अवैज्ञानिक व्यवहार करते देखे गए हैं। यदि नोबेल पुरस्कार प्राप्त महान वैज्ञानिक के प्रति असम्मान न माने तो यह नमूना देखिए।

1912 में जन्मी कमला सोहोनी मुंबई विश्वविद्यालय में प्रथम आईं। महान भौतिक शास्त्री नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिक सीवी रमन ने 1933 में कमल सोहोनी को यह कहते हुए प्रवेश देने से इनकार कर दिया कि मैं अपनी संस्था में किसी भी लड़की को प्रवेश नहीं दूंगा। यह एक महान वैज्ञानिक का बेतूका काम था। कमला ने जब धरना दिया तो कुछ शर्तों के साथ कमला को प्रवेश दिया गया। जिस कमला को लड़की होने के कारण प्रवेश से मना किया गया था उन्होंने दूध और दहलन के प्रोटीन पर काम किया जिससे देश में कुपोषितों को लाभ मिला। 1936 में दूध और दलहन के प्रोटीन पर काम करने वाली पहली विद्यार्थी थी कमला सोहोनी। उन्होंने बाद में केंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। वैज्ञानिक काम के लिए यूरोप और अमेरिका जाती रही कमला को वैज्ञानिक शोध के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार मिला। रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस की पहले निर्देशक बनाकर उन्होंने इतिहास रचा।

इसी तरह मौसम वैज्ञानिक उपकरणों की विशेषज्ञ अन्नामनी को रमन प्रयोगशाला में प्रवेश तो मिला लेकिन अन्नामनी और उनकी सहपाठी सुनंदा बाई को पुरुष साथियों से दूर रहकर ही काम करना पड़ता था। इन दोनों महिला वैज्ञानिकों को एचडी की उपाधि देने से मना कर दिया गया था जबकि उन्होंने बाकायदा शोध प्रबंध प्रस्तुत किए थे। अकेले अन्नामनी के पांच शोध पत्र प्रकाशित हो चुके थे। उन्होंने दो पुस्तकें भी लिखीं। वे 1976 में भारतीय मौसम विज्ञान की उप महानिदेशक के पद से सेवानिवृत हुईं।

श्रेष्ठ वैज्ञानिक जरूरी नहीं कि अपने व्यवहारिक जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी रखते हैं दूसरी ओर ऐसे लोग भी हैं जो वैज्ञानिक ना होते हुए भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण या वैज्ञानिक मानसिकता के अनुसार काम करते हैं। अक्सर देखा गया है सामंती समाज जहां सामाजिक, आर्थिक गैर बराबरी है, प्रश्न पूछना, तर्क करना, सम्पन्न लोगों पर संदेह करना संभव नहीं होत है। अतः वे वैज्ञानिक मानसिकता से दूर होते हैं। जहां बराबरी, सामाजिक न्याय की गुंजाइश होती है, प्रश्न पूछने की, तर्क करने की, मुक्त संवाद करने की आजादी होती है, वहां वैज्ञानिक मानसिकता की जगह अधिक होती है।